مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ

जिन्नों और आदमियों को मिला कर[243] और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं

مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى

जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं[244] और इस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया[245] और मुसल्मानों को

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا

पन्दो नसीहत[246] और काफ़िरों से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किये जाओ[247] हम अपना

عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ ۙ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ

काम करते हैं[248] और राह देखो हम भी राह देखते हैं[249] और अल्लाह ही के लिये हैं आस्मानों और

الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ

ज़मीन के ग़ैब[250] और उसी की तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तो उस की बन्दगी करो और उस पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾ ع ١٤ ١٠

तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं

اٰیاتها ١١١ | ١٢ سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ ٥٣ | رکوعاتها ١٢

सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है, इस में एक सो ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾ ۚ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ

येह रोशन किताब की आयतें हैं[2] बेशक हम ने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा

न करेंगे। **242 :** या'नी इख़्तिलाफ़ वाले इख़्तिलाफ़ के लिये और रह़मत वाले इत्तिफ़ाक़ के लिये। **243 :** क्यूं कि उस को इल्म है कि बातिल के इख़्तियार करने वाले बहुत होंगे। **244 :** और अम्बिया के ह़ाल और उन की उम्मतों के सुलूक देख कर आप को अपनी क़ौम की ईज़ा का बरदाश्त करना और उस पर सब्र फ़रमाना आसान हो। **245 :** और अम्बिया और उन की उम्मतों के तज़्किरे वाक़ेअ़ के मुत़ाबिक़ बयान हुए जो दूसरी किताबों और दूसरे लोगों को ह़ासिल नहीं या'नी जो वाक़िआ़त बयान फ़रमाए गए वोह ह़क़ भी हैं। **246 :** भी, कि गुज़री हुई उम्मतों के ह़ालात और उन के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करें। **247 :** अ़न्क़रीब इस का नतीजा पा लोगे। **248 :** जिस का हमें हमारे रब ने हुक्म दिया। **249 :** तुम्हारे अन्जामे कार की। **250 :** उस से कुछ छुप नहीं सकता। **1 :** सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है इस में बारह रुकूअ़ और एक सो ग्यारह आयतें और एक हज़ार छ[6] सो कलिमे और सात हज़ार एक सो छियासठ ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद ने अशराफ़े अ़रब से कहा था कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करो कि औलादे ह़ज़रते या'क़ूब मुल्के शाम से मिस्र में किस त़रह़ पहुंची और उन के वहां जा कर आबाद होने का क्या सबब हुवा और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का वाक़िआ़

www.dawateislami.net

تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

कि तुम समझो हम तुम्हें सब से अच्छा बयान सुनाते हैं[3] इस लिये कि हम ने तुम्हारी त़रफ़

هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٣﴾ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ

इस क़ुरआन की वह्य भेजी अगर्चे बेशक इस से पहले तुम्हें ख़बर न थी याद करो जब यूसुफ़ ने

لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ

अपने बाप[4] से कहा ऐ मेरे बाप मैं ने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे उन्हें

لِيْ سٰجِدِيْنَ ﴿٤﴾ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا

अपने लिये सज्दा करते देखा[5] कहा ऐ मेरे बच्चे अपना ख़्वाब अपने भाइयों से न कहना[6] कि वोह तेरे साथ कोई चाल

لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ

चलेंगे[7] बेशक शैत़ान आदमी का खुला दुश्मन है[8] और इसी त़रह़ तुझे तेरा रब चुन लेगा[9]

क्या है ? इस पर येह सूरए मुबारका नाज़िल हुई । **2 :** जिस का ए'जाज़ ज़ाहिर और मिन इन्दिल्लाह (अल्लाह की त़रफ़ से) होना वाज़ेह़ और मआ़नी अहले इ़ल्म के नज़्दीक ग़ैर मुश्तबह हैं और इस में ह़लाल व ह़राम ह़ुदूद व अह़काम साफ़ बयान फ़रमाए गए हैं और एक क़ौल येह है कि इस में मुतक़द्दिमीन के अह़वाल रोशन त़ौर पर मज़्कूर हैं और ह़क़ व बात़िल को मुमताज़ कर दिया गया है । **3 :** जो बहुत से अ़जाइब व ग़राइब और ह़िक्मतों और इ़ब्रतों पर मुश्तमिल है और इस में दीन व दुन्या के बहुत फ़वाइद और सलात़ीन व रिआ़या और उ़लमा के अह़वाल और औ़रतों के ख़साइस और दुश्मनों की ईज़ाओं पर सब्र और उन पर क़ाबू पाने के बा'द उन से तजावुज़ करने का नफ़ीस बयान है, जिस से सुनने वाले में नेक सीरती और पाकीज़ा ख़साइल पैदा होते हैं । साह़िबे बह़रुल ह़क़ाइक़ ने कहा कि इस बयान का अह़सन होना इस सबब से है कि येह क़िस्सा इन्सान के अह़वाल के साथ कमाले मुशाबहत रखता है, अगर यूसुफ़ से दिल को और या'क़ूब से रूह़ को और राह़ील से नफ़्स को, बिरादराने यूसुफ़ से क़वी ह़वास को ता'बीर किया जाए और तमाम क़िस्से को इन्सानों के ह़ालात से मुत़ाबक़त दी जाए, चुनान्चे उन्हों ने वोह मुत़ाबक़त बयान भी की है जो यहां ब नज़रे इख़्तिसार दर्ज नहीं की जा सकती । **4 :** ह़ज़रते या'क़ूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम عَلَيْهِمُ السَّلَام **5 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़्वाब देखा कि आस्मान से ग्यारह सितारे उतरे और उन के साथ सूरज और चांद भी हैं, उन सब ने आप को सज्दा किया । येह ख़्वाब शबे जुमुआ़ को देखा, येह रात शबे क़द्र थी । सितारों की ता'बीर आप के ग्यारह भाई हैं और सूरज आप के वालिद और चांद आप की वालिदा या ख़ाला, आप की वालिदए माजिदा का नाम राह़ील है । सुद्दी का क़ौल है कि चूंकि राह़ील का इन्तिक़ाल हो चुका था इस लिये क़मर से आप की ख़ाला मुराद हैं और सज्दा करने से तवाज़ोअ़ करना और मुत़ीअ़ होना मुराद है और एक क़ौल येह है कि ह़क़ीक़तन सज्दा ही मुराद है क्यूं कि उस ज़माने में सलाम की त़रह़ सज्दए तह़िय्यत (ता'ज़ीमी सज्दा) था । ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ उस वक़्त बारह साल की थी और सात और सतरह के क़ौल भी आए हैं । ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बहुत ज़ियादा महब्बत थी इस लिये उन के साथ उन के भाई ह़सद करते थे और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام इस पर मुत़्लअ़ थे इस लिये जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह ख़्वाब देखा तो ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने **6 :** क्यूं कि वोह इस की ता'बीर को समझ लेंगे । ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जानते थे कि अल्लाह तआ़ला ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नुबुव्वत के लिये बरगुज़ीदा फ़रमाएगा और दारैन की ने'मतें और शरफ़ इनायत करेगा इस लिये आप को भाइयों के ह़सद का अन्देशा हुवा और आप ने फ़रमाया : **7 :** और तुम्हारी हलाकत की कोई तदबीर सोचेंगे । **8 :** उन को क़ैद व ह़सद पर उभारेगा । इस में ईमा (इशारा) है कि बिरादराने यूसुफ़ अगर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये ईज़ा व ज़रर पर इक़्दाम करेंगे तो इस का सबब वस्वसए शैत़ान होगा । (ख़ाज़न) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अच्छा ख़्वाब अल्लाह की त़रफ़ से है, चाहिये कि उस को मुह़िब से बयान किया जावे और बुरा ख़्वाब शैत़ान की त़रफ़ से है जब कोई देखने वाला वोह ख़्वाब देखे तो चाहिये कि अपनी बाईं त़रफ़ तीन मरतबा थुक्कारे और येह पढ़े : ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الرُّؤْيَا'' **9 :** इज्तिबा या'नी अल्लाह तआ़ला का किसी बन्दे को

www.dawateislami.net

وَ يُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَ عَلٰۤى اٰلِ

और तुझे बातों का अन्जाम निकालना सिखाएगा[10] और तुझ पर अपनी ने'मत पूरी करेगा और या'क़ूब के

يَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

घर वालों पर[11] जिस त़रह़ तेरे पहले दोनों बाप दादा इब्राहीम और इस्ह़ाक़ पर पूरी की[12] बेशक तेरा रब

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۶﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَ اِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآىٕلِيْنَ ﴿۷﴾ اِذْ

इल्मो ह़िक्मत वाला है बेशक यूसुफ़ और उस के भाइयों में[13] पूछने वालों के लिये निशानियां हैं[14] जब

قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَ اَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَ نَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا

बोले[15] कि ज़रूर यूसुफ़ और उस का भाई[16] हमारे बाप को हम से ज़ियादा प्यारे हैं और हम एक जमाअ़त हैं[17] बेशक हमारे बाप

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۚ﴿۸﴾ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ

सराह़तन इन की मह़ब्बत में डूबे हुए हैं[18] यूसुफ़ को मार डालो या कहीं ज़मीन में फेंक आओ[19] कि तुम्हारे बाप का मुंह सिर्फ़ तुम्हारी ही

बरगुज़ीदा कर लेना या'नी चुन लेना, इस के मा'ना येह हैं कि किसी बन्दे को फ़ैज़े रब्बानी के साथ मख़्सूस करे जिस से उस को त़रह़ त़रह़ के करामात व कमालात बे सअ़्यो मेह़नत ह़ासिल हों। येह मर्तबा अम्बिया के साथ ख़ास है और उन की बदौलत उन के मुक़र्रबीन, सिद्दीक़ीन व शुहदा व सालिह़ीन भी इस ने'मत से सरफ़राज़ किये जाते हैं। **10 :** इल्मो ह़िक्मत अ़त़ा करेगा और कुतुबे साबिक़ा और अह़ादीसे अम्बिया के ग़वामिज़ कश्फ़ (भेद ज़ाहिर) फ़रमाएगा और मुफ़स्सिरीन ने इस से ता'बीरे ख़्वाब भी मुराद ली है। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ता'बीरे ख़्वाब के बड़े माहिर थे। **11 :** नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमा कर, जो आ'ला मनासिब में से है और ख़ल्क़ के तमाम मन्सब इस से फ़रोतर (कमतर) हैं और सल्त़नतें दे कर दीन व दुन्या की ने'मतों से सरफ़राज़ कर के। **12 :** कि उन्हें नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इस ने'मत से मुराद येह है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नारे नमरूद से ख़लासी दी और अपना ख़लील बनाया और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते या'क़ूब और अस्बात़ इनायत किये। **13 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पहली बीबी लया बिन्ते लयान आप के मामूं की बेटी हैं, उन से आप के छ[6] फ़रज़न्द हुए : रूबील, शम्ऊ़न, लावी, यहूज़ा, ज़बूलून, यश्जुर और चार बेटे ह़रम (बांदियों) से हुए : दान, नफ़्ताली, जाद, आशिर, इन की माएं ज़ुल्फ़ा और बुल्हा। "लया" के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने इन की बहन राह़ील से निकाह़ फ़रमाया, इन से दो फ़रज़न्द हुए : यूसुफ़, बिन्यामीन। येह ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के बारह साह़िब ज़ादे हैं। इन्हीं को "अस्बात़" कहते हैं। **14 :** पूछने वालों से यहूद मुराद हैं जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ह़ाल और औलादे ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ित़्त़ए कन्आ़न से सर ज़मीने मिस्र की त़रफ़ मुन्तक़िल होने का सबब दरयाफ़्त किया था। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ह़ालात बयान फ़रमाए और यहूद ने उन को तौरैत के मुत़ाबिक़ पाया तो उन्हें ह़ैरत हुई कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने किताबें पढ़ने और उ़लमा व अह़बार की मजलिस में बैठने और किसी से कुछ सीखने के बिग़ैर इस क़दर सह़ीह़ वाक़िआ़त कैसे बयान फ़रमाए! येह दलील है कि आप ज़रूर नबी हैं और क़ुरआने पाक ज़रूर वह़्ये इलाही है और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इल्मे क़ुद्स से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इलावा बरीं इस वाक़िए़ में बहुत सी इ़ब्रतें और नसीह़तें और ह़िक्मतें हैं। **15 :** बिरादराने ह़ज़रते यूसुफ़ **16 :** ह़क़ीक़ी बिन्यामीन **17 :** क़वी हैं, ज़ियादा काम आ सकते हैं, ज़ियादा फ़ाएदा पहुंचा सकते हैं, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام छोटे हैं क्या काम कर सकते हैं? **18 :** और येह बात उन के ख़याल में न आई कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा का उन की सिग़र सिनी में इन्तिक़ाल हो गया इस लिये वोह मज़ीद शफ़्क़त व मह़ब्बत के मौरिद (मुस्तह़िक़) हुए और उन में रुश्दो नजाबत (बुज़ुर्गी) की वोह निशानियां पाई जाती हैं जो दूसरे भाइयों में नहीं हैं। येह सबब है कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ ज़ियादा मह़ब्बत है। येह सब बातें ख़याल में न ला कर उन्हें अपने वालिदे माजिद का ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ज़ियादा मह़ब्बत फ़रमाना शाक़ गुज़रा और उन्हों ने बाहम मिल कर येह मश्वरा किया कि कोई ऐसी तदबीर सोचनी चाहिये जिस से हमारे वालिद साह़िब को हमारी त़रफ़ ज़ियादा इल्तिफ़ात हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि शैत़ान भी उस मजलिसे मश्वरा में शरीक हुवा और उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़त्ल की राय दी और गुफ़्त्गूए मश्वरा इस त़रह़ हुई **19 :** आबादियों से दूर। बस येही सूरतें हैं जिन से

www.dawateislami.net

اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا

तरफ़ रहे[20] और इस के बा'द फिर नेक हो जाना[21] उन में एक कहने वाला[22] बोला

تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبٰتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

यूसुफ़ को मारो नहीं[23] और उसे अन्धे (गहरे तारीक) कूंएं में डाल दो कि कोई राह चलता उसे आ कर ले जाए[24]

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ

अगर तुम्हें करना है[25] बोले ऐ हमारे बाप आप को क्या हुवा कि यूसुफ़ के मुआ़मले में हमारा ए'तिबार नहीं करते और हम तो इस के

لَنٰصِحُوْنَ ۝١١ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝١٢

ख़ैर ख़्वाह हैं कल इसे हमारे साथ भेज दीजिये कि मेवे खाए और खेले[26] और बेशक हम इस के निगहबान हैं[27]

قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ

बोला बेशक मुझे रन्ज देगा कि तुम इसे ले जाओ[28] और डरता हूं कि इसे भेड़िया खा ले[29] और तुम

عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا لَىِٕنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّاۤ اِذًا

इस से बे ख़बर रहो[30] बोले अगर इसे भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअ़त हैं जब तो हम किसी

لَّخٰسِرُوْنَ ۝١٤ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْۤا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبٰتِ الْجُبِّ ۚ

मसरफ़ (काम) के नहीं[31] फिर जब उसे ले गए[32] और सब की राय येही ठहरी कि इसे अन्धे (तारीक गहरे) कूंएं में डाल दें[33]

---

20 : और उन्हें फ़क़त तुम्हारी ही महब्बत हो और की नहीं। 21 : और तौबा कर लेना। 22 : या'नी यहूज़ा या रूबील 23 : क्यूं कि क़त्ल गुनाहे अ़ज़ीम है। 24 : या'नी कोई मुसाफ़िर वहां गुज़रे और किसी मुल्क को उन्हें ले जाए, इस से भी ग़रज़ हासिल है कि न वोह यहां रहेंगे न वालिद साहिब की नज़रे इ़नायत इस तरह उन पर होगी। 25 : इस में इशारा है कि चाहिये तो येह कि कुछ भी न करो लेकिन अगर तुम ने इरादा ही कर लिया है तो बस इतने ही पर इक्तिफ़ा करो। चुनान्चे सब इस पर मुत्तफ़िक़ हो गए और अपने वालिद से 26 : या'नी तफ़रीह के हलाल मशाग़िल से लुत्फ़ अन्दोज़ हों मिस्ल शिकार और तीर अन्दाज़ी वग़ैरा के। 27 : इन की पूरी निगहदाश्त रखेंगे। 28 : क्यूं कि इन की एक साअ़त की जुदाई गवारा नहीं है। 29 : क्यूं कि इस सर ज़मीन में भेड़िये और दरिन्दे बहुत हैं। 30 : और अपनी सैरो तफ़रीह में मश्ग़ूल हो जाओ। 31 : लिहाज़ा इन्हें हमारे साथ भेज दीजिये। तक़्दीरे इलाही यूंही थी हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने इजाज़त दी और वक़्ते रवानगी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़मीस जो हरीरे जन्नत (जन्नती रेशम) की थी और जिस वक़्त कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कपड़े उतार कर आग में डाला गया था हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने वोह क़मीस आप को पहनाई थी, वोह क़मीसे मुबारक हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام को और उन से उन के फ़रज़न्द हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को पहुंची थी, वोह क़मीस हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने ता'वीज़ बना कर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के गले में डाल दी। 32 : इस तरह कि जब तक हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام उन्हें देखते रहे वहां तक तो वोह हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को अपने कन्धों पर सुवार किये हुए इ़ज़्ज़तो आराम के साथ ले गए, जब दूर निकल गए और हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की नज़रों से ग़ाइब हो गए तो उन्हों ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को ज़मीन पर दे पटका और दिलों में जो अ़दावत थी वोह ज़ाहिर हुई, जिस की तरफ़ जाते थे वोह मारता था और ता'ने देता था और ख़्वाब जो किसी तरह उन्हों ने सुन पाया था उस पर तश्नीअ़ करते थे और कहते थे अपने ख़्वाब को बुला वोह अब तुझे हमारे हाथों छुटाए (छुड़ाए)। जब सख़्तियां हद को पहुंचीं तो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने यहूज़ा से कहा : ख़ुदा से डर ! और इन लोगों को इन ज़ियादतियों से रोक ! यहूज़ा ने अपने भाइयों से कहा कि तुम ने मुझ से

www.dawateislami.net

وَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَجَآءُوْ

और हम ने उसे वह्य भेजी[34] कि ज़रूर तू उन्हें उन का येह काम जता देगा[35] ऐसे वक़्त कि वोह न जानते होंगे[36] और रात हुए

اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿۱۶﴾ قَالُوْا يٰۤاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا

अपने बाप के पास रोते आए[37] बोले ऐ हमारे बाप हम दौड़ करते निकल गए[38] और यूसुफ़ को

يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا

अपने अस्बाब के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया और आप किसी तरह हमारा यक़ीन न करेंगे अगर्चे

الثلثة

صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ

हम सच्चे हों[39] और उस के कुरते पर एक झूटा ख़ून लगा लाए[40] कहा बल्कि तुम्हारे दिलों ने

اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَ

एक बात तुम्हारे वासिते बना ली है[41] तो सब्र अच्छा और **अल्लाह** ही से मदद चाहता हूं उन बातों पर जो तुम बता रहे हो[42] और

क्या अ़हद किया था ? याद करो, क़त्ल की नहीं ठहरी थी, तब वोह इन ह़रकतों से बाज़ आए । **33 :** चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया । येह कूंवां कन्आ़न से तीन फ़रसंग के फ़ासिले पर ह़वाली बैतुल मक़्दिस (बैतुल मक़्दिस के इर्द गिर्द) या सर ज़मीने उरदुन में वाक़ेअ़ था । ऊपर से इस का मुंह तंग था और अन्दर से फ़राख़ । ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हाथ पाउं बांध कर, क़मीस उतार कर, कूंएं में छोड़ा, जब वोह उस की निस्फ़ गहराई तक पहुंचे तो रस्सी छोड़ दी ताकि आप पानी में गिर कर हलाक हो जाएं । ह़ज़रते जिब्रीले अमीन ब हुक्मे इलाही पहुंचे और उन्हों ने आप को एक पथ्थर पर बिठा दिया जो कूंएं में था और आप के हाथ खोल दिये और रवानगी के वक़्त ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का क़मीस जो ता'वीज़ बना कर आप के गले में डाल दिया था वोह खोल कर आप को पहना दिया, उस से अंधेरे कूंएं में रोशनी हो गई । سُبْحٰنَ اللّٰه अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक अज्सादे शरीफ़ा में क्या बरकत है कि एक क़मीस जो उस बा बरकत बदन से मस हुवा उस ने अंधेरे कूंएं को रोशन कर दिया । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मल्बूसात और आसारे मक़्बूलाने ह़क़ से बरकत ह़ासिल करना शरअ़ से साबित और अम्बिया की सुन्नत है । **34 :** ब वासित़ा ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के या ब त़रीक़े इल्हाम कि आप ग़मगीन न हों हम आप को अ़मीक़ चाह (गहरे कूंएं) से बुलन्द जाह (बुलन्द मर्तबे) पर पहुंचाएंगे और तुम्हारे भाइयों को ह़ाजत मन्द बना कर तुम्हारे पास लाएंगे और उन्हें तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान करेंगे और ऐसा होगा **35 :** जो उन्हों ने इस वक़्त तुम्हारे साथ किया । **36 :** कि तुम यूसुफ़ हो । क्यूं कि उस वक़्त आप की शान ऐसी रफ़ीअ़ होगी, आप उस मस्नदे सल्त़नत व हुकूमत पर होंगे कि वोह आप को न पहचानेंगे । अल ह़ासिल बिरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में डाल कर वापस हुए और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का क़मीस जो उतार लिया था उस को एक बकरी के बच्चे के ख़ून में रंग कर साथ ले लिया । **37 :** जब मकान के क़रीब पहुंचे उन के चीख़ने की आवाज़ ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने सुनी तो घबरा कर बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ऐ मेरे फ़रज़न्दो ! क्या तुम्हें बकरियों में कुछ नुक़्सान हुवा ? उन्हों ने कहा : नहीं । फ़रमाया फिर क्या मुसीबत पहुंची और यूसुफ़ कहां हैं ? **38 :** या'नी हम आपस में एक दूसरे से दौड़ करते थे कि कौन आगे निकले इस दौड़ में हम दूर निकल गए **39 :** क्यूं कि न हमारे साथ कोई गवाह है न कोई ऐसी दलील व अ़लामत है जिस से हमारी रास्त गोई (सच्चाई) साबित हो । **40 :** और क़मीस को फाड़ना भूल गए । ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام वोह क़मीस अपने चेहरए मुबारक पर रख कर बहुत रोए और फ़रमाया : अ़जब त़रह़ का होशियार भेड़िया था जो मेरे बेटे को खा तो गया और क़मीस को फाड़ा तक नहीं । एक रिवायत में येह भी है कि वोह एक भेड़िया पकड़ लाए और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे कि येह भेड़िया है जिस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को खाया है आप ने उस भेड़िये से दरयाफ़्त फ़रमाया : वोह ब हुक्मे इलाही गोया हो कर कहने लगा : हुज़ूर न मैं ने आप के फ़रज़न्द को खाया और न अम्बिया के साथ कोई भेड़िया ऐसा कर सकता है । ह़ज़रत ने उस भेड़िये को छोड़ दिया और बेटों से **41 :** और वाक़िआ़ इस के ख़िलाफ़ है । **42 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तीन रोज़ कूंएं में रहे, इस के बा'द **अल्लाह** ने उन्हें इस से नजात अ़ता फ़रमाई ।

www.dawateislami.net

جَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا

एक क़ाफ़िला आया[43] उन्हों ने अपना पानी लाने वाला भेजा[44] तो उस ने अपना डोल डाला[45] बोला आहा कैसी ख़ुशी की बात है येह तो

غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ

एक लड़का है और उसे एक पूंजी बना कर छुपा लिया[46] और अल्लाह जानता है जो वोह करते हैं और भाइयों ने उसे खोटे

بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَقَالَ ع

दामों गिनती के रुपों पर बेच डाला[47] और उन्हें उस में कुछ रग़बत न थी[48] और मिस्र के

الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ

जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा वोह अपनी औरत से बोला[49] इन्हें इ़ज़्ज़त से रख[50] शायद इन से हमें नफ़अ़ पहुंचे[51]

اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۫ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ

या इन को हम बेटा बना लें[52] और इसी त़रह़ हम ने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमाव (रहने को ठिकाना) दिया और इस लिये कि उसे

تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

बातों का अन्जाम सिखाएं[53] और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है मगर अक्सर आदमी

43 : जो मद्यन से मिस्र की त़रफ़ जा रहा था वोह रास्ता बहक कर इस जंगल में आ पड़ा जहां आबादी से बहुत दूर येह कूंवां था और इस का पानी खारी था मगर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की बरकत से मीठा हो गया, जब वोह क़ाफ़िले वाले इस कूंएं के क़रीब उतरे तो **44 :** जिस का नाम मालिक बिन ज़ु'र ख़ज़ाई था, येह शख़्स मद्यन का रहने वाला था, जब वोह कूंएं पर पहुंचा **45 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने वोह डोल पकड़ लिया और उस में लटक गए, मालिक ने डोल खींचा, आप बाहर तशरीफ़ लाए, उस ने आप का हुस्ने आ़लम अफ़रोज़ देखा तो निहायत ख़ुशी में आ कर अपने यारों को मुज़्दा दिया **46 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई जो इस जंगल में अपनी बकरियां चराते थे वोह देखभाल रखते थे, आज जो उन्हों ने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में न देखा तो उन्हें तलाश हुई और क़ाफ़िले में पहुंचे वहां उन्हों ने मालिक बिन ज़ु'र के पास ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को देखा तो वोह उस से कहने लगे कि येह ग़ुलाम है, हमारे पास से भाग आया है, किसी काम का नहीं है, ना फ़रमान है, अगर ख़रीदो तो हम इसे सस्ता बेच देंगे, फिर इसे कहीं इतनी दूर ले जाना कि इस की ख़बर भी हमारे सुनने में न आए। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام उन के ख़ौफ़ से ख़ामोश खड़े रहे और आप ने कुछ न फ़रमाया। **47 :** जिन की ता'दाद बक़ौल क़तादा बीस दिरहम थी। **48 :** फिर मालिक बिन ज़ु'र और उस के साथी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मिस्र में लाए, उस ज़माने में मिस्र का बादशाह रय्यान बिन वलीद बिन नज़्वान अ़मलीक़ी था और उस ने अपनी इनाने सल्त़नत क़ित़फ़ीर मिस्री के हाथ में दे रखी थी, तमाम ख़ज़ाइन उस के तह़ते तसर्रुफ़ थे, उस को अ़ज़ीज़े मिस्र कहते थे और वोह बादशाह का वज़ीरे आ'ज़म था, जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिये लाए गए तो हर शख़्स के दिल में आप की त़लब पैदा हुई और ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ाना शुरूअ़ की ता आंकि आप के वज़्न के बराबर सोना, इतनी ही चांदी, इतना ही मुश्क, इतना ही ह़रीर, क़ीमत मुक़र्रर हुई और आप का वज़्न चार सो रत़्ल था और उ़म्र शरीफ़ उस वक़्त तेरह या सतरह साल की थी, अ़ज़ीज़े मिस्र ने इस क़ीमत पर आप को ख़रीद लिया और अपने घर ले आया, दूसरे ख़रीदार उस के मुक़ाबले में ख़ामोश हो गए। **49 :** जिस का नाम ज़ुलैख़ा था **50 :** क़ियाम गाह नफ़ीस हो, लिबास व ख़ूराक आ'ला क़िस्म की हो। **51 :** और वोह हमारे कामों में अपने तदब्बुर व दानाई से हमारे लिये नाफ़ेअ़ और बेहतर मददगार हों और उमूरे सल्त़नत व मुल्क दारी के सर अन्जाम में हमारे काम आएं क्यूं कि रुश्द के आसार इन के चेहरे से नुमूदार हैं। **52 :** येह क़ित़फ़ीर ने इस लिये कहा कि उस के कोई औलाद न थी। **53 :** या'नी ख़्वाबों की ता'बीर।

www.dawateislami.net

يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي

नहीं जानते और जब अपनी पूरी कुव्वत को पहुंचा[54] हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़ता फ़रमाया[55] और हम ऐसा ही सिला देते हैं

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ

नेकों को और वोह जिस औ़रत[56] के घर में था उस ने उसे लुभाया कि अपना आपा न रोके[57] और दरवाज़े सब बन्द

الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْۤ اَحْسَنَ

कर दिये[58] और बोली आओ तुम्हीं से कहती हूं[59] कहा अल्लाह की पनाह[60] वोह अ़ज़ीज़ तो मेरा रब या'नी परवरिश करने वाला है

مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ

उस ने मुझे अच्छी त़रह़ रखा[61] बेशक ज़ालिमों का भला नहीं होता और बेशक औ़रत ने उस का इरादा किया और वोह भी औ़रत का इरादा करता अगर

اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ

अपने रब की दलील न देख लेता[62] हम ने यूं ही किया कि उस से बुराई और बे ह़याई को फेर दें[63] बेशक वोह

مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ

हमारे चुने हुए बन्दों में से है[64] और दोनों दरवाज़े की त़रफ़ दौड़े[65] और औ़रत ने उस का कुरता पीछे से चीर लिया

وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا

और दोनों को औ़रत का मियां[66] दरवाज़े के पास मिला[67] बोली क्या सज़ा है इस की जिस ने तेरी घर वाली से बदी चाही[68]

---

54 : शबाब अपनी निहायत (उ़रूज) पर आया और उ़म्र शरीफ़ बक़ौले ज़ह़्हाक बीस साल की और बक़ौले सुद्दी तीस की और बक़ौले कलबी अठ्ठारह और तीस के दरमियान हुई **55 :** या'नी इल्मे बा अ़मल और फ़क़ाहत फ़िद्दीन (दीन की कामिल पहचान) इ़नायत की। बा'ज़ उ़लमा ने कहा कि हुक्म से क़ौले सवाब और इल्म से ता'बीरे ख़्वाब मुराद है। बा'ज़ ने फ़रमाया : इल्म ह़क़ाइक़े अश्या का जानना और ह़िक्मत इल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल करना है। **56 :** या'नी ज़ुलैख़ा **57 :** और उस के साथ मश्ग़ूल हो कर उस की ना जाइज़ ख़्वाहिश को पूरा करें। ज़ुलैख़ा के मकान में यके बा'द दीगरे सात दरवाज़े थे। उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام पर तो येह ख़्वाहिश पेश की **58 :** मुक़फ़्फ़ल कर डाले (ताले लगा दिये) **59 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **60 :** वोह मुझे इस क़बाह़त से बचाए जिस की तू त़लब गार है, मुद्दआ़ येह था कि येह फ़े'ले ह़राम है, मैं इस के पास जाने वाला नहीं। **61 :** उस का बदला येह नहीं कि मैं उस के अह़ल में ख़ियानत करूं, जो ऐसा करे वोह ज़ालिम है **62 :** मगर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने रब की बुरहान देखी और इस इरादए फ़ासिदा से मह़फ़ूज़ रहे और बुरहान इस्मते नुबुव्वत है। अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नुफ़ूसे त़ाहिरा को अख़्लाक़े ज़मीमा (बुरे अख़्लाक़) व अफ़्आ़ले रज़ीला (घटिया कामों) से पाक पैदा किया है और अख़्लाक़े शरीफ़ा त़ाहिरा मुक़द्दसा पर इन की ख़िल्क़त फ़रमाई है इस लिये वोह हर ना कर्दनी (ना क़ाबिले अ़मल) फ़े'ल से बाज़ रहते हैं। एक रिवायत येह भी है कि जिस वक़्त ज़ुलैख़ा आप के दरपै हुई उस वक़्त आप ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को देखा कि अंगुश्ते मुबारक दन्दाने अक़्दस के नीचे दबा कर इज्तिनाब का इशारा फ़रमाते हैं। **63 :** और ख़ियानत व ज़िना से मह़फ़ूज़ रखें **64 :** जिन्हें हम ने बरगुज़ीदा किया है और जो हमारी त़ाअ़त में इख़्लास रखते हैं। अल ह़ासिल जब ज़ुलैख़ा आप के दरपै हुई तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भागे और ज़ुलैख़ा उन के पीछे उन्हें पकड़ने भागी, ह़ज़रत जिस जिस दरवाज़े पर पहुंचते जाते थे उस का क़ुफ़्ल खुल कर गिरता चला जाता था। **65 :** आख़िर कार ज़ुलैख़ा ह़ज़रत तक पहुंची और उस ने आप का कुरता पीछे से पकड़ कर आप को खींचा कि आप निकलने न पाएं मगर आप ग़ालिब आए। **66 :** या'नी अ़ज़ीज़े मिस्र **67 :** फ़ौरन ही ज़ुलैख़ा ने अपनी बराअत ज़ाहिर करने और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपने मक्र से ख़ाइफ़ करने के लिये ह़ीला तराशा और शोहर से **68 :** इतना कह कर उसे अन्देशा हुवा कि कहीं

www.dawateislami.net

إِلَّآ أَن يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِىَ رَٰوَدَتْنِى عَن نَّفْسِى وَ

मगर येह कि क़ैद किया जाए या दुख की मार[69] कहा इस ने मुझ को लुभाया कि मैं अपनी हिफ़ाज़त न करूं[70] और

شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَآ ۚ إِن كَانَ قَمِيصُهُۥ قُدَّ مِن قُبُلٍ فَصَدَقَتْ

औ़रत के घर वालों में से एक गवाह ने[71] गवाही दी अगर इन का कुरता आगे से चिरा है तो औ़रत सच्ची है

وَهُوَ مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٢٦﴾ وَإِن كَانَ قَمِيصُهُۥ قُدَّ مِن دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ

और इन्हों ने ग़लत़ कहा[72] और अगर इन का कुरता पीछे से चाक हुवा तो औ़रत झूटी है और येह

مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَءَا قَمِيصَهُۥ قُدَّ مِن دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُۥ مِن كَيْدِكُنَّ ط

सच्चे[73] फिर जब अ़ज़ीज़ ने उस का कुरता पीछे से चिरा देखा[74] बोला बेशक येह तुम औ़रतों का चरित्र (फ़रेब) है

إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۜ وَٱسْتَغْفِرِى

बेशक तुम्हारा चरित्र (फ़रेब) बड़ा है[75] ऐ यूसुफ़ तुम इस का ख़याल न करो[76] और ऐ औ़रत तू अपने गुनाह की

لِذَنۢبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنتِ مِنَ ٱلْخَاطِـِٔينَ ﴿٢٩﴾ ع وَقَالَ نِسْوَةٌ فِى ٱلْمَدِينَةِ ٱمْرَأَتُ ٣ ع ٩ ١٣

मुआ़फ़ी मांग[77] बेशक तू ख़त़ावारों में है[78] और शहर में कुछ औ़रतें बोलीं[79] कि अ़ज़ीज़ की

अ़ज़ीज़ तैश में आ कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़त्ल के दरपै न हो जाए और येह ज़ुलैख़ा की शिद्दते मह़ब्बत कब गवारा कर सकती थी इस लिये उस ने येह कहा : **69 :** या'नी इस को कोड़े लगाए जाएं। जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि ज़ुलैख़ा उलटा आप पर इल्ज़ाम लगाती है और आप के लिये क़ैद व सज़ा की सूरत पैदा करती है तो आप ने अपनी बराअत का इज़्हार और ह़क़ीक़ते ह़ाल का बयान ज़रूरी समझा और **70 :** या'नी येह मुझ से फ़े'ले क़बीह़ की त़लब गार हुई मैं ने उस से इन्कार किया और मैं भागा। अ़ज़ीज़ ने कहा : येह बात किस त़रह़ बावर की जाए ? ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि घर में एक चार महीने का बच्चा पालने में था जो ज़ुलैख़ा के मामूं का लड़का है उस से दरयाफ़्त करना चाहिये। अ़ज़ीज़ ने कहा कि चार महीने का बच्चा क्या जाने और कैसे बोले ? ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला उस को गोयाई देने और उस से मेरी बे गुनाही की शहादत अदा करा देने पर क़ादिर है। अ़ज़ीज़ ने उस बच्चे से दरयाफ़्त किया : क़ुदरते इलाही से वोह बच्चा गोया हुवा और उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्दीक़ की और ज़ुलैख़ा के क़ौल को बात़िल बताया। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **71 :** या'नी उस बच्चे ने **72 :** क्यूं कि येह सूरत बताती है कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आगे बढ़े और और ज़ुलैख़ा ने इन को दफ़्अ़ किया तो कुरता आगे से फटा **73 :** इस लिये कि येह ह़ाल साफ़ बताता है कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस से भागते थे और ज़ुलैख़ा पीछे से पकड़ती थी इस लिये कुरता पीछे से फटा। **74 :** और जान लिया कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सच्चे हैं और ज़ुलैख़ा झूटी है। **75 :** फिर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर अ़ज़ीज़ ने इस त़रह़ मा'ज़िरत की **76 :** और इस पर मग़मूम न हो बेशक तुम पाक हो और इस कलाम से येह भी मत़लब था कि इस का किसी से ज़िक्र न करो ताकि चरचा न हो और शोहरा आ़म न हो जाए। **फ़ाएदा :** इस के इ़लावा भी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बराअत की बहुत सी अ़लामतें मौजूद थीं : एक तो येह कि कोई शरीफ़ त़बीअ़त इन्सान अपने मोहसिन के साथ इस त़रह़ की ख़ियानत रवा नहीं रखता, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ब ई करामते अख़्लाक़ किस त़रह़ ऐसा कर सकते थे। दुवुम येह कि देखने वालों ने आप को भागते आते देखा और त़ालिब की येह शान नहीं होती, वोह दरपै होता है, भागता नहीं, भागता वोही है जो किसी बात पर मजबूर किया जाए और वोह उसे गवारा न करे। सिवुम येह कि औ़रत ने इन्तिहा दरजे का सिंगार किया था और वोह ग़ैर मा'मूली ज़ैबो ज़ीनत की ह़ालत में थी। इस से मा'लूम होता है कि रग़बत व एहतिमाम मह़ज़ उस की त़रफ़ से था। चहारुम ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِیْمَات का तक़्वा व त़हारत जो एक दराज़ मुद्दत तक देखा जा चुका था इस से आप की त़रफ़ ऐसे अम्रे क़बीह़ (बुरे फ़े'ल) की निस्बत किसी त़रह़ क़ाबिले ए'तिबार नहीं हो सकती थी, फिर अ़ज़ीज़े मिस्र ज़ुलैख़ा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहने लगा : **77 :** कि तू ने बे गुनाह पर तोहमत लगाई। **78 :** अ़ज़ीज़े मिस्र ने अगर्चे इस क़िस्से को बहुत दबाया लेकिन येह ख़बर छुप न सकी और इस का चरचा और शोहरा हो ही गया **79 :** या'नी शुरफ़ाए मिस्र की औ़रतें

www.dawateislami.net

الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ

बीबी अपने नौ जवान का दिल लुभाती है बेशक उन की महब्बत इस के दिल में पेर (समा) गई है हम तो इसे सरीह

ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۰﴾ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَ اَعْتَدَتْ

ख़ुद रफ़्ता पाते हैं[80] तो जब ज़ुलैख़ा ने उन का चकरवा (चे मी गोई व ता'न) सुना तो उन औ़रतों को बुला भेजा[81] और उन के लिये

لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّ اٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ قَالَتِ اخْرُجْ

मस्नदें तय्यार कीं[82] और उन में हर एक को एक छुरी दी[83] और यूसुफ़[84] से कहा इन पर निकल

عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَ قُلْنَ حَاشَ

आओ[85] जब औ़रतों ने यूसुफ़ को देखा उस की बड़ाई बोलने लगीं[86] और अपने हाथ काट लिये[87] और बोलीं अल्लाह को

لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿۳۱﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ

पाकी है येह तो जिन्से बशर से नहीं[88] येह तो नहीं मगर कोई मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ता ज़ुलैख़ा ने कहा तो येह हैं वोह जिन पर

لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ وَ لَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَ لَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ

तुम मुझे ता'ना देती थीं[89] और बेशक मैं ने इन का जी लुभाना चाहा तो इन्हों ने अपने आप को बचाया[90] और बेशक अगर वोह येह काम न करेंगे

مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَ لَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ

जो मैं इन से कहती हूं तो ज़रूर क़ैद में पड़ेंगे और वोह ज़रूर ज़िल्लत उठाएंगे[91] यूसुफ़ ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे क़ैदख़ाना ज़ियादा पसन्द

80 : कि इस आशुफ़्तगी में इस को अपने नंगो नामूस (इ़ज़्ज़त व मर्तबे) और पर्दे व इफ़्फ़त (पाक दामनी) का लिहाज़ भी न रहा। **81 :** या'नी जब उस ने सुना कि अशराफ़े मिस्र की औ़रतें उस को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की महब्बत पर मलामत करती हैं तो उस ने चाहा कि वोह अपना उ़ज़्र उन्हें ज़ाहिर कर दे, इस लिये उस ने उन की दा'वत की और अशराफ़े मिस्र की चालीस औ़रतों को मदऊ़ कर दिया, उन में वोह सब भी थीं जिन्हों ने इस पर मलामत की थी, ज़ुलैख़ा ने उन औ़रतों को बहुत इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ मेहमान बनाया **82 :** निहायत पुर तकल्लुफ़, जिन पर वोह बहुत इ़ज़्ज़तो आराम से तक्ये लगा कर बैठीं और दस्तर ख़्वान बिछाए गए और क़िस्म क़िस्म के खाने और मेवे चुने गए। **83 :** ताकि खाने के लिये उस से गोश्त काटें और मेवे तराशें **84 :** को उ़म्दा लिबास पहना कर उन **85 :** पहले तो आप ने इस से इन्कार किया लेकिन जब इसरार व ताकीद ज़ियादा हुई तो उस की मुख़ालफ़त के अन्देशे से आप को आना ही पड़ा। **86 :** क्यूं कि उन्हों ने इस जमाले आ़लम अफ़रोज़ के साथ नुबुव्वत व रिसालत के अन्वार और तवाज़ोअ़ व इन्किसार के आसार व शाहाना हैबत व इक़्तिदार और लज़ाइज़े अत़्ड़मा (लज़ीज़ खानों) और सुवरे जमीला (ह़सीन चेहरों) की त़रफ़ से बे नियाज़ी की शान देखी तअ़ज्जुब में आ गईं और आप की अ़ज़मतो हैबत दिलों में भर गई और हु़स्नो जमाल ने ऐसा वारफ़्ता किया कि उन औ़रतों को ख़ुद फ़रामोशी हो गई **87 :** बजाए लीमूं के और दिल ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ ऐसे मश्ग़ूल हुए कि हाथ काटने की तक्लीफ़ का अस्लन एह़सास न हुवा **88 :** कि ऐसा हु़स्नो जमाल बशर में देखा ही नहीं गया और इस के साथ नफ़्स की येह त़हारत कि मिस्र के आ़ली ख़ानदान, जमीलए मुख़द्दरात (ख़ूब सूरत पर्दा नशीन औ़रतें) त़रह़ त़रह़ के नफ़ीस लिबासों और ज़ेवरों से आरास्ता व पैरास्ता सामने मौजूद हैं और आप किसी की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाते और क़त़्अ़न इल्तिफ़ात नहीं करते। **89 :** अब तुम ने देख लिया और तुम्हें मा'लूम हो गया कि मेरी शेफ़्तगी (महब्बत) कुछ क़ाबिले तअ़ज्जुब और जाए मलामत नहीं। **90 :** और किसी त़रह मेरी त़रफ़ माइल न हुए। इस पर मिस्री औ़रतों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा कि आप ज़ुलैख़ा का कहना मान लीजिये ! ज़ुलैख़ा बोली : **91 :** और चोरों और क़ातिलों और ना फ़रमानों के साथ जेल में रहेंगे क्यूं कि इन्हों ने मेरा दिल लिया और मेरी ना फ़रमानी की और फ़िराक़ की तलवार से मेरा ख़ून बहाया तो यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को भी ख़ुश गवार खाना पीना

www.dawateislami.net

إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۚ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ

है उस काम से जिस की त़रफ़ येह मुझे बुलाती हैं और अगर तू मुझ से इन का मक्र न फेरेगा[92] तो मैं इन की त़रफ़ माइल होउंगा

وَأَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ

और नादान बनूंगा तो उस के रब ने उस की सुन ली और उस से औ़रतों का मक्र फेर दिया

إِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ

बेशक वोही है सुनता जानता[93] फिर सब कुछ निशानियां देख दिखा कर पिछली मत इन्हें येही आई (येही मुनासिब समझा) कि ज़रूर

لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ ع وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَآ

एक मुद्दत तक इसे क़ैदख़ाने में डालें[94] और उस के साथ क़ैदख़ाने में दो जवान दाख़िल हुए[95] उन में एक[96] बोला

اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ

मैं ने ख़्वाब देखा कि[97] शराब निचोड़ता हूं और दूसरा बोला[98] मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे सर पर

رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ

कुछ रोटियां हैं जिन में से परिन्द खाते हैं हमें इस की ता'बीर बताइये बेशक हम आप को नेकोकार

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ

देखते हैं[99] यूसुफ़ ने कहा जो खाना तुम्हें मिला करता है वोह तुम्हारे पास न आने पाएगा कि मैं इस की ता'बीर उस के आने से

और आराम की नींद सोना मुयस्सर न होगा, जैसा मैं जुदाई की तक्लीफ़ों में मुसीबतें झेलती और सदमों में परेशानी के साथ वक़्त काटती हूं, येह भी तो कुछ तक्लीफ़ उठाएं, मेरे साथ ह़रीर (नर्म व मुलायम रेशमी बिस्तर) में शाहाना सरीर (शाही पलंग) पर ऐ़श गवारा नहीं है तो क़ैदख़ाने के चुभने वाले बोरिये पर नंगे जिस्म को दुखाना गवारा करें। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام येह सुन कर मजलिस से उठ गए और मिस्री औ़रतें मलामत करने के बहाने से बाहर आईं और एक एक ने आप से अपनी तमन्नाओं और मुरादों का इज़्हार किया, आप को उन की गुफ़्तगू बहुत ना गवार हुई (خازن ومدارک وحسینی) तो बारगाहे इलाही में **92 :** और अपनी इ़स्मत की पनाह में न लेगा **93 :** जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से उम्मीद पूरी होने की कोई शक्ल न देखी तो मिस्री औ़रतों ने ज़ुलैख़ा से कहा कि मुनासिब येह मा'लूम होता है कि अब दो तीन रोज़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को क़ैदख़ाने में रखा जाए ताकि वहां की मेह़नतो मशक़्क़त देख कर उन्हें ने'मतो राह़त की क़द्र हो और वोह तेरी दरख़्वास्त क़बूल करें, ज़ुलैख़ा ने इस राय को माना और अ़ज़ीज़े मिस्र से कहा कि मैं उस इ़बरी ग़ुलाम की वज्ह से बदनाम हो गई हूं और मेरी त़बीअ़त उस से नफ़रत करने लगी है, मुनासिब येह है कि उन को क़ैद किया जाए ताकि लोग समझ लें कि वोह ख़त़ावार हैं और मैं मलामत से बरी होउं, येह बात अ़ज़ीज़ के ख़याल में आ गई। **94 :** चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया और आप को क़ैदख़ाने में भेज दिया। **95 :** उन में से एक तो मिस्र के शाहे आ'ज़म रय्यान बिन वलीद बिन नज़वान अ़मलीक़ी का मोह्तमिमे मत़्बख़ (बावर्ची ख़ाने का ज़िम्मेदार) था और दूसरा उस का साक़ी (शराब पिलाने वाला) उन दोनों पर येह इल्ज़ाम था कि इन्हों ने बादशाह को ज़ह्र देना चाहा, इस जुर्म में दोनों क़ैद किये गए। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام जब क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए तो आप ने अपने इ़ल्म का इज़्हार शुरूअ़ कर दिया और फ़रमाया कि मैं ख़्वाबों की ता'बीर का इ़ल्म रखता हूं। **96 :** जो बादशाह का साक़ी था **97 :** मैं एक बाग़ में हूं वहां एक अंगूर के दरख़्त में तीन ख़ोशे रसीदा लगे हुए हैं, बादशाह का कासा मेरे हाथ में है, मैं उन ख़ोशों से **98 :** या'नी मोह्तमिमे मत़्बख़ **99 :** कि आप दिन में रोज़ादार रहते हैं, रात तमाम नमाज़ में गुज़ारते हैं, जब कोई जेल में बीमार होता है उस की इ़यादत करते हैं, उस की ख़बर गीरी रखते हैं, जब किसी पर तंगी होती है उस के लिये कशाइश

قَبْلَ اَنْ یَّاْتِیَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِیْ رَبِّیْ ؕ اِنِّیْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا

पहले तुम्हें बता दूंगा[100] येह उन इल्मों में से है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है बेशक मैं ने उन लोगों का दीन न माना जो

یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیْۤ

अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वोह आख़िरत से मुन्किर हैं और मैं ने अपने बाप दादा

اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ

इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब का दीन इख़्तियार किया[101] हमें नहीं पहुंचता कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक

شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَیْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

ठहराएं येह[102] अल्लाह का एक फ़ज़्ल है हम पर और लोगों पर मगर अक्सर लोग

لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۸﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ

शुक्र नहीं करते[103] ऐ मेरे क़ैदख़ाने के दोनों साथियो क्या जुदा जुदा रब[104] अच्छे या एक

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۳۹﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْهَاۤ

अल्लाह जो सब पर ग़ालिब[105] तुम उस के सिवा नहीं पूजते मगर निरे नाम जो तुम ने और तुम्हारे

اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ

बाप दादा ने तराश लिये हैं[106] अल्लाह ने उन की कोई सनद न उतारी हुक्म नहीं मगर अल्लाह का

की राह निकालते हैं। हज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन को ता'बीर देने से पहले अपने मो'जिज़े का इज़्हार और तौहीद की दा'वत शुरूअ़ कर दी और येह ज़ाहिर फ़रमा दिया कि इल्म में आप का दरजा इस से ज़ियादा है जितना वोह लोग आप की निस्बत ए'तिक़ाद रखते हैं, क्यूं कि इल्मे ता'बीर ज़न पर मब्नी है इस लिये आप ने चाहा कि उन्हें ज़ाहिर फ़रमा दें कि आप ग़ैब की यक़ीनी ख़बरें देने पर क़ुदरत रखते हैं और इस से मख़्लूक़ आजिज़ है। जिस को अल्लाह ने ग़ैबी उ़लूम अ़ता फ़रमाए हों उस के नज़्दीक ख़्वाब की ता'बीर क्या बड़ी बात है। उस वक़्त मो'जिज़े का इज़्हार आप ने इस लिये फ़रमाया कि आप जानते थे कि इन दोनों में एक अ़न्क़रीब सूली दिया जाएगा तो आप ने चाहा कि इस को कुफ़्र से निकाल कर इस्लाम में दाख़िल करें और जहन्नम से बचावें। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर आ़लिम अपनी इल्मी मन्ज़िलत का इस लिये इज़्हार करे कि लोग इस से नफ़्अ़ उठाएं तो येह जाइज़ है। (مدارک وخازن) **100 :** उस की मिक़्दार और उस का रंग और उस के आने का वक़्त और येह कि तुम ने क्या खाया या कितना खाया, कब खाया। **101 :** हज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام ने अपने मो'जिज़े का इज़्हार फ़रमाने के बा'द येह भी ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप ख़ानदाने नुबुव्वत से हैं और आप के आबाओ अज्दाद अम्बिया हैं, जिन का मर्तबए उ़ल्या (बुलन्द तरीन मर्तबा) दुन्या में मश्हूर है। इस से आप का मक़्सद येह था कि सुनने वाले आप की दा'वत क़बूल करें और आप की हिदायत को मानें। **102 :** तौहीद इख़्तियार करना और शिर्क से बचना **103 :** उस की इबादत बजा नहीं लाते और मख़्लूक़ परस्ती करते हैं। **104 :** जैसे कि बुत परस्तों ने बना रखे हैं। कोई सोने का कोई चांदी का, कोई तांबे का, कोई लोहे का, कोई लकड़ी का, कोई पथ्थर का, कोई और किसी चीज़ का, कोई छोटा, कोई बड़ा, मगर सब के सब निकम्मे, बेकार, न नफ़्अ़ दे सकें, न ज़रर पहुंचा सकें, ऐसे झूटे मा'बूद **105 :** कि न कोई उस का मुक़ाबिल हो सकता है न उस के हुक्म में दख़्ल दे सकता है न उस का कोई शरीक है न नज़ीर, सब पर उस का हुक्म जारी और सब उस के मम्लूक (बन्दे)। **106 :** और उन का नाम मा'बूद रख लिया है, बा वुजूदे कि वोह बे हक़ीक़त पथ्थर हैं।

www.dawateislami.net

اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

उस ने फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी को न पूजो[107] येह सीधा दीन है[108] लेकिन अक्सर लोग

لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا فَیَسْقِیْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ

नहीं जानते[109] ऐ क़ैदख़ाने के दोनों साथियो तुम में एक तो अपने रब (बादशाह) को शराब पिलाएगा[110]

وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَیُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّیْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِیَ الْاَمْرُ الَّذِیْ

रहा दूसरा[111] वोह सूली दिया जाएगा तो परिन्दे उस का सर खाएंगे[112] हुक्म हो चुका उस बात का

فِیْهِ تَسْتَفْتِیٰنِ ﴿۴۱﴾ ؕ وَقَالَ لِلَّذِیْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِیْ عِنْدَ

जिस का तुम सुवाल करते थे[113] और यूसुफ़ ने उन दोनों में से जिसे बचता समझा[114] उस से कहा अपने रब (बादशाह) के पास मेरा

رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّیْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِی السِّجْنِ بِضْعَ

ज़िक्र करना[115] तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने रब (बादशाह) के सामने यूसुफ़ का ज़िक्र करे तो यूसुफ़ कई बरस और जेलख़ाने में

سِنِیْنَ ﴿۴۲﴾ ع وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّیْۤ اَرٰی سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْكُلُهُنَّ ۱۵ ع

रहा[116] और बादशाह ने कहा मैं ने ख़्वाब में देखीं सात गाएं फ़रबा (मोटी ताज़ी) कि उन्हें सात दुबली गाएं खा

سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ یٰبِسٰتٍ ؕ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَاُ

रही हैं और सात बालें हरी और दूसरी सात सूखी[117] ऐ दरबारियो

اَفْتُوْنِیْ فِیْ رُءْیَایَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْیَا تَعْبُرُوْنَ ﴿۴۳﴾ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ

मेरे ख़्वाब का जवाब दो अगर तुम्हें ख़्वाब की ता'बीर आती हो बोले परेशान

107 : क्यूं कि सिर्फ़ वोही मुस्तहिक़े इबादत है। **108 :** जिस पर दलाइल व बराहीन क़ाइम हैं। **109 :** तौहीद व इबादते इलाही की दा'वत देने के बा'द हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने ता'बीरे ख़्वाब की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इर्शाद किया : **110 :** या'नी बादशाह का साक़ी तो अपने ओहदे पर बहाल किया जाएगा और पहले की तरह बादशाह को शराब पिलाएगा और तीन ख़ोशे जो ख़्वाब में बयान किये गए हैं येह तीन दिन हैं इतने ही अय्याम क़ैदख़ाने में रहेगा, फिर बादशाह उस को बुला लेगा। **111 :** या'नी मोहतमिमे मत्बख़ व तआम **112 :** हज़रते इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ता'बीर सुन कर उन दोनों ने हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से कहा कि ख़्वाब तो हम ने कुछ भी नहीं देखा हम तो हंसी कर रहे थे। हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : **113 :** जो मैं ने कह दिया येह ज़रूर वाक़ेअ होगा तुम ने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो, अब येह हुक्म टल नहीं सकता। **114 :** या'नी साक़ी को। **115 :** और मेरा हाल बयान करना कि क़ैदख़ाने में एक मज़लूम बे गुनाह क़ैद है और उस की क़ैद को एक ज़माना गुज़र चुका है। **116 :** अक्सर मुफ़स्सिरीन इस तरफ़ हैं कि इस वाक़िए के बा'द हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام सात बरस और क़ैद में रहे और पांच बरस पहले रह चुके थे और इस मुद्दत के गुज़रने के बा'द जब اللہ तआला को हज़रते यूसुफ़ का क़ैद से निकालना मन्ज़ूर हुवा तो मिस्र के शाहे आ'ज़म रय्यान बिन वलीद ने एक अजीब ख़्वाब देखा, जिस से उस को बहुत परेशानी हुई और उस ने मुल्क के साहिरों और काहिनों और ता'बीर देने वालों को जम्अ कर के उन से अपना ख़्वाब बयान किया। **117 :** जो हरी पर लिपटीं और उन्हों ने हरी को सुखा दिया।

www.dawateislami.net

اَحْلَامٍ ۚ وَ مَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَ قَالَ الَّذِيْ
ख़्वाबें हैं और हम ख़्वाब की ता'बीर नहीं जानते और बोला वोह जो
نَجَا مِنْهُمَا وَ ادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾
उन दोनों में से बचा था[118] और एक मुद्दत बा'द उसे याद आया[119] मैं तुम्हें इस की ता'बीर बताऊंगा मुझे भेजो[120]
يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ
ऐ यूसुफ़ ऐ सिद्दीक़ हमें ता'बीर दीजिये सात फ़रबा गायों की जिन्हें सात दुबली खाती
عِجَافٌ وَّ سَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ اُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْۤ اَرْجِعُ اِلَى
हैं और सात हरी बालें और दूसरी सात सूखी[121] शायद मैं लोगों की तरफ़
النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا
लौट कर जाऊं शायद वोह आगाह हों[122] कहा तुम खेती करोगे सात बरस लगातार[123] तो जो
حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖۤ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ
काटो उसे उस की बाल में रहने दो[124] मगर थोड़ा जितना खा लो[125] फिर इस के
بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا
बा'द सात करें (सख़्त तंगी वाले) बरस आएंगे[126] कि खा जाएंगे जो तुम ने उन के लिये पहले जम्अ कर रखा था[127] मगर थोड़ा जो
تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَ فِيْهِ
बचा लो[128] फिर इन के बा'द एक बरस आएगा जिस में लोगों को मींह दिया जाएगा और उस में
ع يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَ قَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ
रस निचोड़ेंगे[129] और बादशाह बोला कि उन्हें मेरे पास ले आओ तो जब उस के पास एलची आया[130] कहा

118 : या'नी साक़ी **119 :** कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया था कि अपने आक़ा के सामने मेरा ज़िक्र करना। साक़ी ने कहा कि **120 :** क़ैदख़ाने में वहां ता'बीरे ख़्वाब के एक आ़लिम हैं, बस बादशाह ने उस को भेज दिया, वोह क़ैदख़ाने में पहुंच कर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में अ़र्ज़ करने लगा : **121 :** येह ख़्वाब बादशाह ने देखा है और मुल्क के तमाम उ़लमा व हुकमा इस की ता'बीर से आ़जिज़ रहे हैं, हज़रत इस की ता'बीर इर्शाद फ़रमाएं। **122 :** ख़्वाब की ता'बीर से और आप के इल्मो फ़ज़्ल और मर्तबतो मन्ज़िलत को जानें और आप को इस मेहनत से रिहा कर के अपने पास बुलाएं। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ता'बीर दी और **123 :** इस ज़माने में ख़ूब पैदावार होगी, सात मोटी गायों और सात सब्ज़ बालियों से इसी की तरफ़ इशारा है। **124 :** ताकि ख़राब न हो और आफ़ात से महफ़ूज़ रहे **125 :** उस पर से भूसी उतार लो और उसे साफ़ कर लो, बाक़ी को ज़ख़ीरा बना कर महफ़ूज़ कर लो। **126 :** जिन की तरफ़ दुबली गायों और सूखी बालों में इशारा है **127 :** और ज़ख़ीरा कर लिया था। **128 :** बीज के लिये ताकि उस से काश्त करो। **129 :** अंगूर का और तिल, ज़ैतून के तेल निकालेंगे, येह साल कसीरुल ख़ैर होगा, ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब होगी, दरख़्त ख़ूब फलेंगे। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से येह

ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِیْ قَطَّعْنَ اَیْدِیَهُنَّؕ

अपने रब (बादशाह) के पास पलट जा फिर उस से पूछ[131] क्या ह़ाल है उन औ़रतों का जिन्हों ने अपने हाथ काटे थे

اِنَّ رَبِّیْ بِكَیْدِهِنَّ عَلِیْمٌ(۵۰) قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ یُوْسُفَ

बेशक मेरा रब उन का फ़रेब जानता है[132] बादशाह ने कहा ऐ औ़रतो तुम्हारा क्या काम था जब तुम ने यूसुफ़ का

عَنْ نَّفْسِهٖؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَیْهِ مِنْ سُوْٓءٍؕ قَالَتِ امْرَاَتُ

जी (दिल) लुभाना चाहा बोलीं अल्लाह को पाकी है हम ने उन में कोई बदी न पाई अ़ज़ीज़ की औ़रत[133]

الْعَزِیْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ

बोली अब अस्ली बात खुल गई मैं ने उन का जी लुभाना चाहा था और वोह बेशक

الصّٰدِقِیْنَ(۵۱) ذٰلِكَ لِیَعْلَمَ اَنِّیْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَیْبِ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ

सच्चे हैं[134] यूसुफ़ ने कहा येह मैं ने इस लिये किया कि अ़ज़ीज़ को मा'लूम हो जाए कि मैं ने पीठ पीछे ख़ियानत न की और अल्लाह

كَیْدَ الْخَآىٕنِیْنَ(۵۲)

दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता

ता'बीर सुन कर वापस हुवा और बादशाह की ख़िदमत में जा कर ता'बीर बयान की, बादशाह को येह ता'बीर बहुत पसन्द आई और उसे यक़ीन हुवा कि जैसा ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया है ज़रूर वैसा ही होगा, बादशाह को शौक़ पैदा हुवा कि इस ख़्वाब की ता'बीर ख़ुद ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बाने मुबारक से सुने। **130 :** और उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में बादशाह का पयाम अ़र्ज़ किया तो आप ने **131 :** या'नी उस से दरख़्वास्त कर कि वोह पूछे तफ़्तीश करे **132 :** येह आप ने इस लिये फ़रमाया ताकि बादशाह के सामने आप की बराअत और बे गुनाही मा'लूम हो जाए और येह उस को मा'लूम हो कि येह क़ैदे त़वील बे वज्ह हुई ताकि आयिन्दा ह़ासिदों को नेश ज़नी (बुराई करने) का मौक़अ़ न मिले। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दफ़्ए़ तोहमत में कोशिश करना ज़रूरी है। अब क़ासिद ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास से येह पयाम ले कर बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा। बादशाह ने सुन कर औ़रतों को जम्अ़ किया और उन के साथ अ़ज़ीज़ की औ़रत को भी। **133 :** ज़ुलैख़ा **134 :** बादशाह ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास पयाम भेजा कि औ़रतों ने आप की पाकी बयान की और अ़ज़ीज़ की औ़रत ने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया, इस पर ह़ज़रत।

www.dawateislami.net

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِىٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىٓ ۚ

और मैं अपने नफ़्स को बे कुसूर नहीं बताता[135] बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिस पर मेरा रब रह्म करे[136]

إِنَّ رَبِّى غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِى بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ

बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेह्रबान है[137] और बादशाह बोला उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें ख़ास अपने

لِنَفْسِى ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ

लिये चुन लूं[138] फिर जब उस से बात की कहा बेशक आज आप हमारे यहां मुअ़ज़्ज़ज़ मो'तमद हैं[139] यूसुफ़ ने कहा

ٱجْعَلْنِى عَلَىٰ خَزَآئِنِ ٱلْأَرْضِ ۖ إِنِّى حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا

मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूं[140] और यूंही हम ने

135 : ज़ुलैख़ा के इक़रार व ए'तिराफ़ के बा'द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जो येह फ़रमाया था कि मैं ने अपनी बराअत का इज़्हार इस लिये चाहा था ताकि अ़ज़ीज़ को येह मा'लूम हो जाए कि मैं ने उस की ग़ैबत (ग़ैर मौजूदगी) में उस की ख़ियानत नहीं की है और उस के अह्ल की हुरमत (इ़ज़्ज़त) ख़राब करने से मुज्तनिब (दूर) रहा हूं और जो इल्ज़ाम मुझ पर लगाए गए हैं मैं उन से पाक हूं, इस के बा'द आप का ख़याल मुबारक इस त़रफ़ गया कि इस में अपनी त़रफ़ पाकी की निस्बत और अपनी नेकी का बयान है ऐसा न हो कि इस में शाने ख़ुदबीनी और ख़ुद पसन्दी (अपने फ़ख़्रो कमाल और ता'रीफ़) का शाइबा भी आए। इसी लिये **अल्लाह** तआला की जनाब में तवाज़ोअ़ व इन्किसार (आ़जिज़ी) से अ़र्ज़ किया कि मैं अपने नफ़्स को बे क़ुसूर नहीं बताता, मुझे अपनी बे गुनाही पर नाज़ नहीं है और मैं गुनाह से बचने को अपने नफ़्स की ख़ूबी क़रार नहीं देता, नफ़्स की जिन्स का येह ह़ाल है कि **136 :** या'नी अपने जिस मख़्सूस बन्दे को अपने करम से मा'सूम करे तो उस का बुराइयों से बचना **अल्लाह** के फ़ज़्लो रहमत से है और मा'सूम करना उसी का करम है। **137 :** जब बादशाह को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़ल्म और आप की अमानत का ह़ाल मा'लूम हुवा, और वोह आप के हुस्ने सब्र, हुस्ने अदब, क़ैदख़ाने वालों के साथ एह्सान, मेह्नतों और तक्लीफ़ों पर सबात व इस्तिक़्लाल (साबित क़दमी) रखने पर मुत्तलअ़ हुवा तो उस के दिल में आप का बहुत ही अ़ज़ीम ए'तिक़ाद पैदा हुवा **138 :** और अपना मख़्सूस बना लूं। चुनान्चे उस ने मुअ़ज़्ज़ज़ीन की एक जमाअ़त बेहतरीन सुवारियां और शाहाना साज़ो सामान और नफ़ीस लिबास ले कर क़ैदख़ाने भेजी ताकि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को निहायत ता'ज़ीमो तक्रीम के साथ ऐवाने शाही में लाएं, उन लोगों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर बादशाह का पयाम अ़र्ज़ किया, आप ने क़बूल फ़रमाया और क़ैदख़ाने से निकलते वक़्त क़ैदियों के लिये दुआ़ फ़रमाई, जब क़ैदख़ाने से बाहर तशरीफ़ लाए तो उस के दरवाज़े पर लिखा : येह बला का घर, ज़िन्दों की क़ब्र और दुश्मनों की बदगोई और सच्चों के इम्तिह़ान की जगह है, फिर ग़ुस्ल फ़रमाया और पोशाक पहन कर ऐवाने शाही की त़रफ़ रवाना हुए, जब क़ल्ए के दरवाज़े पर पहुंचे तो फ़रमाया : मेरा रब मुझे काफ़ी है उस की पनाह बड़ी और उस की सना बरतर और उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, फिर क़ल्ए में दाख़िल हुए बादशाह के सामने पहुंचे तो येह दुआ़ की, कि या रब मेरे ! तेरे फ़ज़्ल से इस की भलाई त़लब करता हूं और इस की और दूसरों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं, जब बादशाह से नज़र मिली तो आप ने अ़रबी में सलाम फ़रमाया, बादशाह ने दरयाफ़्त किया : येह क्या ज़बान है ? फ़रमाया : येह मेरे अ़म (चचा) ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बान है, फिर आप ने उस को इ़ब्रानी ज़बान में दुआ़ दी। उस ने दरयाफ़्त किया : येह कौन सी ज़बान है ? फ़रमाया : येह मेरे अब्बा की ज़बान है। बादशाह येह दोनों ज़बानें न समझ सका बा वुजूदे कि वोह सत्तर ज़बानें जानता था, फिर उस ने जिस ज़बान में ह़ज़रत से गुफ़्तगू की आप ने उसी ज़बान में उस को जवाब दिया, उस वक़्त आप की उ़म्र शरीफ़ तीस साल की थी, इस उ़म्र में येह वुस्अ़ते उ़लूम देख कर बादशाह को बहुत ह़ैरत हुई और उस ने आप को अपने बराबर जगह दी। **139 :** बादशाह ने दरख़्वास्त की, कि ह़ज़रत इस के ख़्वाब की ता'बीर अपनी ज़बान मुबारक से सुना दें, ह़ज़रत ने उस ख़्वाब की पूरी तफ़्सील भी सुना दी जिस जिस शान से कि उस ने देखा था, बा वुजूदे कि आप से येह ख़्वाब पहले मुज्मलन (मुख़्तसरन) बयान किया गया था। इस पर बादशाह को बहुत तअ़ज्जुब हुवा ! कहने लगा कि आप ने मेरा ख़्वाब हू बहू बयान फ़रमा दिया, ख़्वाब तो अ़जीब था ही मगर आप का इस त़रह बयान फ़रमा देना इस से भी ज़ियादा अ़जीब तर है, अब ता'बीर इर्शाद हो जाए, आप ने ता'बीर बयान फ़रमाने के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि अब लाज़िम येह है कि ग़ल्ले जम्अ़ किये जाएं और इन फ़राख़ी के सालों में कसरत से काश्त कराई जाए और ग़ल्ले मअ़ बालियों के मह़फ़ूज़ रखे जाएं और रिआ़या की पैदावार में से ख़ुमुस (पांचवां हिस्सा) लिया जाए, इस से जो जम्अ़ होगा वोह मिस्र व ह़वालिये मिस्र (मिस्र के इर्द गिर्द) के बाशिन्दों के लिये काफ़ी होगा और फिर ख़ल्क़े ख़ुदा हर हर त़रफ़ से तेरे पास ग़ल्ला ख़रीदने आएगी और तेरे यहां इतने ख़ज़ाइन व अम्वाल जम्अ़ होंगे जो तुझ से पहलों के लिये जम्अ़ न हुए, बादशाह ने कहा : येह इन्तिज़ाम कौन करेगा ? **140 :** या'नी अपनी क़लम रव (सल्त़नत) के तमाम

لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا

यूसुफ़ को उस मुल्क पर क़ुदरत बख़्शी उस में जहां चाहे रहे[141] हम अपनी रह़मत[142] जिसे

مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ

चाहें पहुंचाएं और हम नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते और बेशक आख़िरत का सवाब उन के लिये बेहतर जो

ख़ज़ाने मेरे सिपुर्द कर दे, बादशाह ने कहा : आप से ज़ियादा इस का मुस्तह़िक़ और कौन हो सकता है और उस ने इस को मन्ज़ूर किया। **मसाइल :** अह़ादीस में त़लबे इमारत (ह़ुकूमत) की मुमानअ़त आई है, उस के येह मा'ना हैं कि जब मुल्क में अह्ल मौजूद हों और इक़ामते अह़कामे इलाही किसी एक शख़्स के साथ ख़ास न हो उस वक़्त इमारत त़लब करना मक्रूह है, लेकिन जब एक ही शख़्स अह्ल हो तो उस को अह़कामे इलाहिय्यह की इक़ामत के लिये इमारत त़लब करना जाइज़ बल्कि वाजिब है और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इसी ह़ाल में थे, आप रसूल थे, उम्मत के मसालेह़ (फ़ाएदों) के आ़लिम थे, येह जानते थे कि क़ह़त़ शदीद होने वाला है जिस में ख़ल्क़ को राह़तो आसाइश पहुंचाने की येही सबील (राह) है कि इ़नाने ह़ुकूमत (निज़ामे ह़ुकूमत) को आप अपने हाथ में लें, इस लिये आप ने इमारत त़लब फ़रमाई। **मस्अला :** ज़ालिम बादशाह की त़रफ़ से ओ़ह्दे क़बूल करना ब निय्यते इक़ामते अ़द्ल जाइज़ है। **मस्अला :** अगर अह़कामे दीन का इज्रा (नफ़ाज़) काफ़िर या फ़ासिक़ बादशाह की तम्कीन (ता़क़त) के बिग़ैर न हो सके तो उस में उस से मदद लेना जाइज़ है। **मस्अला :** अपनी ख़ूबियों का बयान तफ़ाख़ुर व तकब्बुर के लिये ना जाइज़ है लेकिन दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाने या ख़ल्क़ के ह़ुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त करने के लिये अगर इज़्हार की ज़रूरत पेश आए तो मम्नूअ़ नहीं, इसी लिये ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बादशाह से फ़रमाया कि मैं ह़िफ़ाज़त व इ़ल्म वाला हूं। **141 :** सब इन के तह़्ते तसर्रुफ़ (इख़्तियार में) है। इमारत त़लब करने के एक साल बा'द बादशाह ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बुला कर आप की ताजपोशी की और तलवार और मोहर आप के सामने पेश की और आप को त़िलाई तख़्त पर तख़्त नशीन किया जो जवाहिरात से मुरस्सअ़ था और अपना मुल्क आप को तफ़्वीज़ (सिपुर्द) किया और क़ित्फ़ीर (अ़ज़ीज़े मिस्र) को मा'ज़ूल कर के आप को उस की जगह वाली बनाया और तमाम ख़ज़ाइन आप को तफ़्वीज़ किये और सल्त़नत के तमाम उमूर आप के हाथ में दे दिये और ख़ुद मिस्ल ताबेअ़ के हो गया कि आप की राय में दख़्ल न देता और आप के हर ह़ुक्म को मानता। उसी ज़माने में अ़ज़ीज़े मिस्र का इन्तिक़ाल हो गया, बादशाह ने उस के इन्तिक़ाल के बा'द ज़ुलैख़ा का निकाह़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के साथ कर दिया, जब यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ज़ुलैख़ा के पास पहुंचे और उस से फ़रमाया : क्या येह उस से बेहतर नहीं जो तू चाहती थी ! ज़ुलैख़ा ने अ़र्ज़ किया : ऐ सिद्दीक़ ! मुझे मलामत न कीजिये, मैं ख़ूबरू थी, नौ जवान थी, ऐ़श में थी और अ़ज़ीज़े मिस्र औ़रतों से सरोकार ही न रखता था और आप को **अल्लाह** तआ़ला ने येह ह़ुस्नो जमाल अ़त़ा किया है, मेरा दिल इख़्तियार से बाहर हो गया और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को मा'सूम किया है आप मह़फ़ूज़ रहे। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़ुलैख़ा को बाकिरा (कुंवारी) पाया और उस से आप के दो फ़रज़न्द हुए इफ़्रासीम और मीशा और मिस्र में आप की ह़ुकूमत मज़बूत़ हुई, आप ने अ़द्ल की बुन्यादें क़ाइम कीं, हर ज़न व मर्द के दिल में आप की मह़ब्बत पैदा हुई और आप ने क़ह़त़ साली के अय्याम के लिये ग़ल्लों के ज़ख़ीरे जम्अ़ करने की तदबीर फ़रमाई, इस के लिये बहुत वसीअ़ और आ़लीशान अम्बार ख़ाने (गोदाम) ता'मीर फ़रमाए और बहुत कसीर ज़ख़ाइर जम्अ़ किये, जब फ़राख़ी के साल गुज़र गए और क़ह़त़ का ज़माना आया तो आप ने बादशाह और उस के ख़ुद्दाम के लिये रोज़ाना सिर्फ़ एक वक़्त का खाना मुक़र्रर फ़रमा दिया, एक रोज़ दोपहर के वक़्त बादशाह ने ह़ज़रत (यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام) से भूक की शिकायत की, आप ने फ़रमाया : येह क़ह़त़ की इब्तिदा का वक़्त है। **पहले** साल में लोगों के पास जो ज़ख़ीरे थे सब ख़त्म हो गए, बाज़ार ख़ाली रह गए, अहले मिस्र ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से जिन्स (ग़ल्ला) ख़रीदने लगे और उन के तमाम दिरहम, दीनार आप के पास आ गए। **दूसरे** साल ज़ेवर और जवाहिरात से ग़ल्ला ख़रीदा और वोह तमाम आप के पास आ गए, लोगों के पास ज़ेवर व जवाहिर की क़िस्म से कोई चीज़ न रही। **तीसरे** साल चौपाए और जानवर दे कर ग़ल्ले ख़रीदे और मुल्क में कोई किसी जानवर का मालिक न रहा। **चौथे** साल में ग़ल्ले के लिये तमाम ग़ुलाम और बांदियां बेच डालीं। **पांचवें** साल तमाम अराज़ी व अ़मला व जागीरें फ़रोख़्त कर के ह़ज़रत से ग़ल्ला ख़रीदा और येह तमाम चीज़ें ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंच गईं। **छटे** साल जब कुछ न रहा तो उन्हों ने अपनी औ़लादें बेचीं, इस त़रह़ ग़ल्ले ख़रीद कर वक़्त गुज़ारा। **सातवें** साल वोह लोग ख़ुद बिक गए और ग़ुलाम बन गए और मिस्र में कोई आज़ाद मर्द व औ़रत बाक़ी न रहा जो मर्द था वोह ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का ग़ुलाम था जो औ़रत थी वोह आप की कनीज़ थी और लोगों की ज़बान पर था कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सी अ़ज़मत व जलालत कभी किसी बादशाह को मुयस्सर न आई। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने बादशाह से कहा कि तू ने देखा **अल्लाह** का मुझ पर कैसा करम है, उस ने मुझ पर ऐसा एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया, अब इन के ह़क़ में तेरी क्या राय है ? बादशाह ने कहा : जो ह़ज़रत की राय और हम आप के ताबेअ़ हैं। आप ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** को गवाह करता हूं और तुझ को गवाह करता हूं कि मैं ने तमाम अहले मिस्र को आज़ाद किया और इन के तमाम अम्लाक (माल व मकानात) और कुल जागीरें वापस कीं। उस ज़माने में ह़ज़रत ने कभी शिकम सेर हो कर खाना नहीं मुलाह़ज़ा फ़रमाया, आप से अ़र्ज़ किया गया कि इतने अ़ज़ीम ख़ज़ानों के मालिक हो कर आप भूके रहते हैं ? फ़रमाया : इस अन्देशे से कि सेर हो जाऊं तो कहीं भूकों को न भूल जाऊं। سُبْحٰنَ اللّٰه ! क्या पाकीज़ा अख़्लाक़ हैं। मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं

www.dawateislami.net

اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ ع ٨

ईमान लाए और परहेज़ गार रहे[143] और यूसुफ़ के भाई आए तो उस के पास हाज़िर हुए तो यूसुफ़ ने उन्हें[144] पहचान लिया

وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ

और वोह उस से अन्जान रहे[145] और जब उन का सामान मुहय्या कर दिया[146] कहा अपना सोतेला भाई[147]

لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾

मेरे पास ले आओ क्या नहीं देखते कि मैं पूरा मापता हूं[148] और मैं सब से बेहतर मेहमान नवाज़ हूं

فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا

फिर अगर उसे ले कर मेरे पास न आओ तो तुम्हारे लिये मेरे यहां माप नहीं और मेरे पास न फटकना बोले

سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ

हम इस की ख़्वाहिश करेंगे उस के बाप से और हमें येह ज़रूर करना और यूसुफ़ ने अपने ग़ुलामों से कहा इन की पूंजी इन की

فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ

ख़ुरजियों (थेलों) में रख दो[149] शायद वोह इसे पहचानें जब अपने घर की तरफ़ लौट कर जाएं[150] शायद वोह

कि मिस्र के तमाम ज़न व मर्द को हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ख़रीदे हुए ग़ुलाम और कनीज़ें बनाने में अल्लाह तआ़ला की येह हिक्मत थी कि किसी को येह कहने का मौक़अ़ न हो कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ग़ुलाम की शान में आए थे और मिस्र के एक शख़्स के ख़रीदे हुए हैं, बल्कि सब मिस्री इन के ख़रीदे और आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हों और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने जो उस हालत में सब्र किया उस की येह जज़ा दी गई। **142 :** या'नी मुल्क व दौलत या नुबुव्वत **143 :** इस से साबित हुवा कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये आख़िरत का अज्रो सवाब इस से बहुत ज़ियादा अफ़्ज़लो आ'ला है जो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दुन्या में अ़ता फ़रमाया और इब्ने उ़यैना ने कहा कि मोमिन अपनी नेकियों का समरा दुन्या व आख़िरत दोनों में पाता है और काफ़िर जो कुछ पाता है दुन्या ही में पाता है आख़िरत में उस का कोई हिस्सा नहीं। मुफ़स्सिरीन ने बयान किया है कि जब क़हत़ की शिद्दत हुई और बलाए अ़ज़ीम आम हो गई तमाम बिलाद व अम्सार (शहर) क़हत़ की सख़्त तर मुसीबत में मुब्तला हुए और हर जानिब से लोग ग़ल्ला ख़रीदने के लिये मिस्र पहुंचने लगे, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام किसी को एक ऊंट के बार से ज़ियादा ग़ल्ला नहीं देते थे ताकि मुसावात (बराबरी) रहे और सब की मुसीबत रफ़्अ़ हो। क़हत़ की जैसी मुसीबत मिस्र और तमाम बिलाद में आई, ऐसी ही कन्आन में भी आई, उस वक़्त हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने बिन्यामीन (हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के छोटे भाई) के सिवा अपने दसों बेटों को ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र भेजा। **144 :** देखते ही **145 :** क्यूं कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंए में डालने से अब तक चालीस साल का त़वील ज़माना गुज़र चुका था और उन का ख़याल येह था कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का इन्तिक़ाल हो चुका होगा और यहां आप तख़्ते सल्त़नत पर शाहाना लिबास में शौकतो शान के साथ जल्वा फ़रमा थे इस लिये उन्हों ने आप को न पहचाना और आप से इबरानी ज़बान में गुफ़्तगू की, आप ने भी इसी ज़बान में जवाब दिया, आप ने फ़रमाया : तुम कौन लोग हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हम शाम के रहने वाले हैं जिस मुसीबत में दुन्या मुब्तला है उसी में हम भी हैं, आप से ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। आप ने फ़रमाया : कहीं तुम जासूस तो नहीं हो ? उन्हों ने कहा : हम अल्लाह की क़सम खाते हैं हम जासूस नहीं हैं हम सब भाई हैं, एक बाप की औलाद हैं, हमारे वालिद बहुत बुज़ुर्ग मुअ़म्मर (बड़ी उ़म्र के) सिद्दीक़ हैं और उन का नामे नामी हज़रते या'क़ूब है वोह अल्लाह के नबी हैं। आप ने फ़रमाया : तुम कितने भाई हो ? कहने लगे : थे तो हम बारह मगर एक भाई हमारा हमारे साथ जंगल गया था हलाक हो गया और वोह वालिद साहिब को हम सब से ज़ियादा प्यारा था। फ़रमाया : अब तुम कितने हो ? अ़र्ज़ किया : दस। फ़रमाया : ग्यारहवां कहां है ? कहा : वोह वालिद साहिब के पास है क्यूं कि जो हलाक हो गया वोह उसी का हक़ीक़ी भाई था, अब वालिद साहिब की उसी से कुछ तसल्ली होती है। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन भाइयों की बहुत इ़ज़्ज़त की और बहुत ख़ातिरो मुदारात (अच्छी त़रह़) से उन की मेज़बानी फ़रमाई। **146 :** हर एक का ऊंट भर दिया और ज़ादे सफ़र दे दिया। **147 :** या'नी बिन्यामीन **148 :** उस को ले आओगे तो एक ऊंट ग़ल्ला उस के हिस्से का और ज़ियादा दूंगा। **149 :** जो उन्हों ने क़ीमत

www.dawateislami.net

يَرْجِعُوْنَ ﴿۶۲﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَبِیْهِمْ قَالُوْا یٰۤاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَیْلُ

वापस आएं फिर जब वोह अपने बाप की त़रफ़ लौट कर गए[151] बोले ऐ हमारे बाप हम से ग़ल्ला रोक दिया गया[152]

فَاَرْسِلْ مَعَنَاۤ اَخَانَا نَكْتَلْ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿۶۳﴾ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ

तो हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिये कि ग़ल्ला लाएं और हम ज़रूर इस की ह़िफ़ाज़त करेंगे कहा क्या इस के बारे में तुम पर

عَلَیْهِ اِلَّا كَمَاۤ اَمِنْتُكُمْ عَلٰۤى اَخِیْهِ مِنْ قَبْلُؕ فَاللّٰهُ خَیْرٌ حٰفِظًا۪ وَّ هُوَ

वैसा ही ए'तिबार कर लूं जैसा पहले इस के भाई के बारे में किया था[153] तो अल्लाह सब से बेहतर निगहबान और वोह

اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿۶۴﴾ وَ لَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ

हर मेहरबान से बढ़ कर मेहरबान और जब उन्हों ने अपना अस्बाब खोला अपनी पूंजी पाई कि उन को फेर

اِلَیْهِمْؕ قَالُوْا یٰۤاَبَانَا مَا نَبْغِیْؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَیْنَاۚ وَ نَمِیْرُ

दी गई है बोले ऐ हमारे बाप अब हम और क्या चाहें येह है हमारी पूंजी कि हमें वापस कर दी गई और हम अपने घर के

اَهْلَنَا وَ نَحْفَظُ اَخَانَا وَ نَزْدَادُ كَیْلَ بَعِیْرٍؕ ذٰلِكَ كَیْلٌ یَّسِیْرٌ ﴿۶۵﴾

लिये ग़ल्ला लाएं और अपने भाई की ह़िफ़ाज़त करें और एक ऊंट का बोझ और ज़ियादा पाएं येह देना बादशाह के सामने कुछ नहीं[154]

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِیْ بِهٖۤ اِلَّاۤ

कहा मैं हरगिज़ इसे तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक तुम मुझे अल्लाह का येह अ़ह्द न दे दो[155] कि ज़रूर इसे ले कर आओगे मगर

اَنْ یُّحَاطَ بِكُمْۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِیْلٌ ﴿۶۶﴾

येह कि तुम घिर जाओ (मजबूर हो जाओ)[156] फिर जब उन्हों ने या'क़ूब को अ़ह्द दे दिया कहा[157] अल्लाह का ज़िम्मा है उन बातों पर जो हम कह रहे हैं

وَ قَالَ یٰبَنِیَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّ ادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍؕ

और कहा ऐ मेरे बेटो[158] एक दरवाज़े से न दाख़िल होना और जुदा जुदा दरवाज़ों से जाना[159]

में दी थी ताकि जब वोह अपना सामान खोलें तो अपनी पूंजी उन्हें मिल जाए और क़ह़त़ के ज़माने में काम आए और मख़्फ़ी (पोशीदा) तौर पर उन के पास पहुंचे ताकि उन्हें लेने में शर्म भी न आए और येह करम व एह़सान दोबारा आने के लिये उन की रग़बत का बाइ़स भी हो। **150 :** और इस का वापस करना ज़रूरी समझें। **151 :** और बादशाह के हुस्ने सुलूक और उस के एह़सान का ज़िक्र किया, कहा कि उस ने हमारी वोह इ़ज़्ज़तो तक्रीम की, कि अगर आप की औलाद में से कोई होता तो भी ऐसा न कर सकता। फ़रमाया : अब अगर तुम बादशाहे मिस्र के पास जाओ तो मेरी त़रफ़ से सलाम पहुंचाना और कहना कि हमारे वालिद तेरे ह़क़ में तेरे इस सुलूक की वज्ह से दुआ़ करते हैं। **152 :** अगर आप हमारे भाई बिन्यामीन को न भेजेंगे तो ग़ल्ला न मिलेगा। **153 :** उस वक़्त भी तुम ने ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया था। **154 :** क्यूं कि उस ने इस से ज़ियादा एह़सान किये हैं। **155 :** या'नी अल्लाह की क़सम न खाओ **156 :** और इस को ले कर आना तुम्हारी त़ाक़त से बाहर हो जाए। **157 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْهِ السَّلَام ने **158 :** मिस्र में **159 :** ताकि नज़रे बद से मह़फ़ूज़ रहो। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि नज़र ह़क़ है। पहली मरतबा ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह नहीं फ़रमाया था इस लिये कि उस वक़्त तक कोई येह न जानता था कि

وَمَآ اُغْنِیْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُۚ

और मैं तुम्हें **अल्लाह** से बचा नहीं सकता[160] हुक्म तो सब **अल्लाह** ही का है मैं ने उसी पर भरोसा किया

وَعَلَیْهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَیْثُ اَمَرَهُمْ

और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा चाहिये और जब वोह दाख़िल हुए जहां से उन के बाप

اَبُوْهُمْؕ مَا كَانَ یُغْنِیْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِیْ نَفْسِ

ने हुक्म दिया था[161] वोह कुछ उन्हें **अल्लाह** से बचा न सकता हां या'क़ूब के जी की

یَعْقُوْبَ قَضٰىهَاؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

एक ख़्वाहिश थी जो उस ने पूरी कर ली और बेशक वोह साहिबे इल्म है हमारे सिखाए से मगर अक्सर लोग नहीं

ع ٨ یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى یُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَیْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّیْۤ اَنَا

जानते[162] और जब वोह यूसुफ़ के पास गए[163] उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी[164] कहा यक़ीन जान मैं ही

اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىٕسْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۶۹﴾ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ

तेरा भाई[165] हूं तो येह जो कुछ करते हैं इस का ग़म न खा[166] फिर जब उन का सामान मुहय्या कर दिया[167]

جَعَلَ السِّقَایَةَ فِیْ رَحْلِ اَخِیْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَیَّتُهَا الْعِیْرُ اِنَّكُمْ

पियाला अपने भाई के कजावे में रख दिया[168] फिर एक मुनादी ने निदा की ऐ क़ाफ़िले वालो ! बेशक

येह सब भाई और एक बाप की औलाद हैं, लेकिन अब चूंकि जान चुके थे इस लिये नज़र हो जाने (लग जाने) का एहतिमाल था, इस वासिते आप ने अ़लाह़दा अ़लाह़दा हो कर दाख़िल होने का हुक्म दिया। इस से मा'लूम हुवा कि आफ़तों और मुसीबतों से दफ़्अ़ की तदबीर और मुनासिब एह़तियातें अम्बिया का त़रीक़ा हैं और इस के साथ ही आप ने अम्रुल्लाह को तफ़्वीज़ कर दिया कि बा वुजूद एहतियातों के तवक्कुल व ए'तिमाद **अल्लाह** पर है अपनी तदबीर पर भरोसा नहीं। **160 :** या'नी जो मुक़द्दर है वोह तदबीर से टाला नहीं जा सकता। **161 :** या'नी शहर के मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से तो उन का मुतफ़र्रिक़ हो कर दाख़िल होना **162 :** जो **अल्लाह** तआ़ला अपने अस्फ़िया (ख़ास बन्दों) को इल्म देता है। **163 :** और उन्हों ने कहा कि हम आप के पास अपने भाई बिन्यामीन को ले आए तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम ने बहुत अच्छा किया, फिर उन्हें इ़ज़्ज़त के साथ मेहमान बनाया और जा बजा दस्तर ख़्वान लगाए गए और हर दस्तर ख़्वान पर दो दो साहिबों को बिठाया गया, बिन्यामीन अकेले रह गए तो वोह रो पड़े और कहने लगे कि आज अगर मेरे भाई यूसुफ़ (عَلَیْہِ السَّلَام) ज़िन्दा होते तो मुझे अपने साथ बिठाते, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम्हारा एक भाई अकेला रह गया और आप ने बिन्यामीन को अपने दस्तर ख़्वान पर बिठाया। **164 :** और फ़रमाया कि तुम्हारे हलाक शुदा भाई की जगह मैं तुम्हारा भाई हो जाऊं तो क्या तुम पसन्द करोगे ? बिन्यामीन ने कहा कि आप जैसा भाई किस को मुयस्सर आए लेकिन या'क़ूब (عَلَیْہِ السَّلَام) का फ़रज़न्द और राह़ील (मादरे ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام) का नूरे नज़र होना तुम्हें कैसे ह़ासिल हो सकता है, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام रो पड़े और बिन्यामीन को गले से लगाया और **165 :** यूसुफ़ (عَلَیْہِ السَّلَام) **166 :** बेशक **अल्लाह** ने हम पर एह़सान किया और हमें ख़ैर के साथ जम्अ़ फ़रमाया और अभी इस राज़ की भाइयों को इत्तिलाअ़ न देना, येह सुन कर बिन्यामीन फ़र्ते मसर्रत से बेख़ुद हो गए और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से कहने लगे : अब मैं आप से जुदा न होउंगा आप ने फ़रमाया : वालिद साहिब को मेरी जुदाई का बहुत ग़म पहुंच चुका है अगर मैं ने तुम्हें भी रोक लिया तो उन्हें और ज़ियादा ग़म होगा, इलावा बरीं रोकने की बजुज़ इस के और कोई सबील भी नहीं है कि तुम्हारी त़रफ़ कोई ग़ैर पसन्दीदा बात मन्सूब हो। बिन्यामीन ने कहा : इस में कोई मुज़ायक़ा नहीं। **167 :** और हर एक को एक बारे शुतुर (एक ऊंट का बोझ) ग़ल्ला दे दिया और एक बारे शुतुर बिन्यामीन के नाम ख़ास कर दिया **168 :** जो बादशाह के पानी पीने का सोने का जवाहिरात से मुरस्सअ़ किया हुवा था और उस वक़्त उस से ग़ल्ला नापने

لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَ اَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ

तुम चोर हो बोले और उन की तरफ़ मुतवज्जेह हुए तुम क्या नहीं पाते बोले बादशाह का

صُوَاعَ الْمَلِكِ وَ لِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّ اَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْا

पैमाना नहीं मिलता और जो उसे लाएगा उस के लिये एक ऊंट का बोझ है और मैं इस का ज़ामिन हूं बोले

تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَ مَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

ख़ुदा की क़सम तुम्हें ख़ूब मा'लूम है कि हम ज़मीन में फ़साद करने न आए और न हम चोर

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ

बोले फिर क्या सज़ा है उस की अगर तुम झूटे हो[169] बोले उस की सज़ा येह है कि जिस के

رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ

अस्बाब (सामान) में मिले वोही उस के बदले में ग़ुलाम बने[170] हमारे यहां ज़ालिमों की येही सज़ा है[171] तो अव्वल उन की ख़ुरजियों (थैलों) से तलाशी शुरूअ़

قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا

की अपने भाई[172] की ख़ुरजी से पहले फिर उसे अपने भाई की ख़ुरजी से निकाल लिया[173] हम ने यूसुफ़ को

لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ

येही तदबीर बताई[174] बादशाही क़ानून में उसे नहीं पहुंचता था कि अपने भाई को ले ले[175] मगर येह कि ख़ुदा चाहे[176]

نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَ فَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْۤا اِنْ

हम जिसे चाहें दरजों बुलन्द करें[177] और हर इ़ल्म वाले से ऊपर एक इ़ल्म वाला है[178] भाई बोले अगर

का काम लिया जाता था, येह पियाला बिन्यामीन के कजावे में रख दिया गया और क़ाफ़िला कन्आ़न के क़स्द से रवाना हो गया, जब शहर के बाहर जा चुका तो अम्बार ख़ाने के कारकुनों को मा'लूम हुवा कि पियाला नहीं है, उन के ख़याल में येही आया कि येह क़ाफ़िले वाले ले गए, उन्हों ने इस की जुस्तजू के लिये आदमी भेजे। **169 :** इस बात में और पियाला तुम्हारे पास निकले। **170 :** और शरीअ़ते हज़रत या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام में चोरी की येही सज़ा मुक़र्रर थी। चुनान्चे उन्हों ने कहा कि **171 :** फिर येह क़ाफ़िला मिस्र लाया गया और उन साहिबों को हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार में हाज़िर किया गया **172 :** या'नी बिन्यामीन **173 :** या'नी बिन्यामीन की ख़ुरजी से पियाला बरआमद किया। **174 :** अपने भाई के लेने की। इस मुआ़मले में भाइयों से इस्तिफ़्सार करें ताकि वोह शरीअ़ते हज़रत या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का हुक्म बताएं जिस से भाई मिल सके। **175 :** क्यूं कि बादशाहे मिस्र के क़ानून में चोरी की सज़ा मारना और दूना माल ले लेना मुक़र्रर थी। **176 :** या'नी येह बात ख़ुदा की मशिय्यत (मरज़ी) से हुई कि इन के दिल में डाल दिया कि सज़ा भाइयों से दरयाफ़्त करें और उन के दिल में डाल दिया कि वोह अपनी सुन्नत के मुताबिक़ जवाब दें। **177 :** इ़ल्म में जैसे कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरजे बुलन्द फ़रमाए। **178 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हर आ़लिम के ऊपर उस से ज़ियादा इ़ल्म रखने वाला आ़लिम होता है यहां तक कि येह सिल्सिला **अल्लाह** तआ़ला तक पहुंचता है, उस का इ़ल्म सब के इ़ल्म से बरतर है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के भाई उ़लमा थे और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन से आ'लम (बड़े आ़लिम) थे। जब पियाला बिन्यामीन के सामान से निकला तो भाई शरमिन्दा हुए और उन्हों ने सर झुकाए और।

www.dawateislami.net

يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ

येह चोरी करे[179] तो बेशक इस से पहले एक भाई चोरी कर चुका है[180] तो यूसुफ़ ने येह बात अपने दिल में रखी और उन

يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا

पर ज़ाहिर न की जी में कहा तुम बदतर जगह हो[181] और अल्लाह खूब जानता है जो बातें बनाते हो बोले

يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا

ऐ अ़ज़ीज़ ! इस के एक बाप हैं बूढ़े बड़े[182] तो हम में इस की जगह किसी को ले लो बेशक हम

نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا

तुम्हारे एहसान देख रहे हैं कहा[183] खुदा की पनाह कि हम लें मगर उसी को जिस के पास

مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَايْــَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ

हमारा माल मिला[184] जब तो हम ज़ालिम होंगे फिर जब इस से ना उम्मीद हुए अलग जा कर सरगोशी करने लगे

قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ

उन का बड़ा भाई बोला क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का अ़हद ले लिया था

وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ

और इस से पहले यूसुफ़ के हक़ में तुम ने कैसी तक़्सीर की तो मैं यहां से न टलूंगा यहां तक कि मेरे बाप[185]

اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا

मुझे इजाज़त दें या अल्लाह मुझे हुक्म फ़रमाए[186] और उस का हुक्म सब से बेहतर अपने बाप के पास लौट कर जाओ फिर अ़र्ज़ करो

يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ

ऐ हमारे बाप बेशक आप के बेटे ने चोरी की[187] और हम तो इतनी ही बात के गवाह हुए थे जितनी हमारे इ़ल्म में थी[188] और हम ग़ैब के

179 : या'नी सामान में पियाला निकलने से सामान वाले का चोरी करना तो यक़ीनी नहीं लेकिन अगर येह फ़े'ल इस का हो **180 :** या'नी हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और जिस को उन्हों ने चोरी क़रार दे कर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ निस्बत किया वोह वाक़िआ़ येह था कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के नाना का एक बुत था जिस को वोह पूजते थे, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने चुपके से वोह बुत लिया और तोड़ कर रास्ते में नजासत के अन्दर डाल दिया, येह हक़ीक़त में चोरी न थी बुत परस्ती का मिटाना था, भाइयों का इस ज़िक्र से येह मुद्दआ़ (मक़्सद) था कि हम लोग बिन्यामीन के सोतेले भाई हैं, येह फ़े'ल हो तो शायद बिन्यामीन का हो, न हमारी इस में शिर्कत न हमें इस की इत्तिलाअ़। **181 :** उस से जिस की तरफ़ चोरी की निस्बत करते हो। क्यूं कि चोरी की निस्बत हज़रते यूसुफ़ की तरफ़ तो ग़लत़ है वोह फ़े'ल तो शिर्क का इब्त़ाल (मिटाना) और इबादत था और तुम ने जो यूसुफ़ के साथ किया वोह बड़ी ज़ियादतियां हैं। **182 :** इन से महब्बत रखते हैं और इन्हीं से उन के दिल की तसल्ली है **183 :** हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **184 :** क्यूं कि तुम्हारे फ़ैसले से हम उसी को लेने के मुस्तहिक़ हैं जिस के कजावे में हमारा माल मिला, अगर हम बजाए इस के दूसरे को लें **185 :** मेरे वापस आने की **186 :** मेरे भाई को ख़लासी दे कर या इस को छोड़

www.dawateislami.net

حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ

निगहबान न थे[189] और उस बस्ती से पूछ देखिये जिस में हम थे और उस क़ाफ़िले से जिस में हम आए

وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ

और हम बेशक सच्चे हैं[190] कहा[191] तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हें कुछ हीला बना दिया तो अच्छा सब्र है

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَ

क़रीब है कि अल्लाह उन सब को मुझ से ला मिलाए[192] बेशक वोही इल्म व हिक्मत वाला है और

تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ

उन से मुंह फेरा[193] और कहा हाए अफ़्सोस यूसुफ़ की जुदाई पर और उस की आंखें ग़म से सफ़ेद हो गईं[194]

فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا

तो वोह गुस्सा खाता रहा बोले[195] ख़ुदा की क़सम आप हमेशा यूसुफ़ की याद करते रहेंगे यहां तक कि गोर कनारे (मौत के क़रीब) जा लगें

اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ

या जान से गुज़र जाएं कहा मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूं[196]

وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ

और मुझे अल्लाह की वोह शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते[197] ऐ बेटो ! जाओ यूसुफ़ और उस के भाई

وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا

का सुराग़ लगाओ और अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो बेशक अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद नहीं होते मगर

कर तुम्हारे साथ चलने का। **187 :** या'नी उन की तरफ़ चोरी की निस्बत की गई **188 :** कि पियाला उन के कजावे में निकला **189 :** और हमें ख़बर न थी कि येह सूरत पेश आएगी, हक़ीक़ते हाल अल्लाह ही जाने कि क्या है और पियाला किस तरह बिन्यामीन के सामान से बरआमद हुवा। **190 :** फिर येह लोग अपने वालिद के पास वापस आए और सफ़र में जो कुछ पेश आया था उस की ख़बर दी और बड़े भाई ने जो कुछ बता दिया था वोह सब वालिद से अ़र्ज़ किया। **191 :** हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने कि चोरी की निस्बत बिन्यामीन की तरफ़ ग़लत है और चोरी की सज़ा ग़ुलाम बनाना येह भी कोई क्या जाने अगर तुम फ़तवा न देते और तुम्हीं न बताते, तो **192 :** या'नी हज़रते यूसुफ़ को और इन के दोनों भाइयों को। **193 :** हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने बिन्यामीन की ख़बर सुन कर और आप का ग़मो अन्दोह (रन्जो अलम) इन्तिहा को पहुंच गया **194 :** रोते रोते आंख की सियाही का रंग जाता रहा और बीनाई ज़ईफ़ हो गई। हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की जुदाई में हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام अस्सी बरस रोते रहे। और अहिब्बा (प्यारों) के ग़म में रोना जो तक्लीफ़ और नुमाइश से न हो और उस के साथ अल्लाह की शिकायत व बे सब्री न पाई जाए रहमत है, इन ग़म के अय्याम में हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बाने मुबारक पर कभी कोई कलिमा बे सब्री का न आया। **195 :** बिरादराने यूसुफ़ अपने वालिद से **196 :** तुम से या और किसी से नहीं **197 :** इस से मा'लूम होता है कि हज़रते या'कूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जानते थे कि यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं और उन से मिलने की तवक़्क़ोअ़ रखते थे और येह भी जानते थे कि उन का ख़्वाब हक़ है ज़रूर वाक़ेअ़ होगा। एक रिवायत येह भी है कि आप ने हज़रते मलकुल मौत से दरयाफ़्त किया कि क्या तुम ने मेरे बेटे यूसुफ़ की रूह क़ब्ज़ की है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : नहीं ! इस से भी आप को उन की ज़िन्दगानी

www.dawateislami.net

الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَ

काफ़िर लोग[198] फिर जब वोह यूसुफ़ के पास पहुंचे बोले ऐ अ़ज़ीज़ हमें और हमारे घर वालों को मुसीबत पहुंची[199] और

اَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ

हम बे क़दर पूंजी ले कर आए हैं[200] तो आप हमें पूरा माप दीजिये[201] और हम पर

عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ

ख़ैरात कीजिये[202] बेशक अल्लाह ख़ैरात वालों को सिला देता है[203] बोले कुछ ख़बर है तुम ने यूसुफ़ और

بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾ قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ

उस के भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे[204] बोले क्या सचमुच आप ही यूसुफ़ हैं

قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِيْ ۫ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَ

कहा मैं यूसुफ़ हूं और येह मेरा भाई बेशक अल्लाह ने हम पर एहसान किया[205] बेशक जो परहेज़ गारी और

يَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ

सब्र करे तो अल्लाह नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता[206] बोले ख़ुदा की क़सम बेशक अल्लाह ने आप को

اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ

हम पर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ख़ताकार थे[207] कहा आज[208] तुम पर कुछ मलामत नहीं

يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ

अल्लाह तुम्हें मुआ़फ़ करे और वोह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है[209] मेरा येह कुरता ले जाओ[210] इसे मेरे बाप के

का इत्मीनान हुवा और आप ने अपने फ़रज़न्दों से फ़रमाया **198 :** येह सुन कर बिरादराने ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام फिर मिस्र की त़रफ़ रवाना हुए। **199 :** या'नी तंगी और भूक की सख़्ती और जिस्मों का दुबला हो जाना। **200 :** रद्दी खोटी जिसे कोई सौदागर माल की क़ीमत में क़बूल न करे, वोह चन्द खोटे दिरहम थे और असासुल बैत (घरेलू सामान) की चन्द पुरानी बोसीदा चीज़ें। **201 :** जैसा खरे दामों से देते थे **202 :** येह नाक़िस पूंजी क़बूल कर के। **203 :** उन का येह ह़ाल सुन कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर गिर्या त़ारी हुवा और चश्मे गौहर फ़िशां से अश्क रवां हो गए और **204 :** या'नी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को मारना, कूंएं में गिराना, बेचना, वालिद से जुदा करना और उन के बा'द उन के भाई को तंग रखना, परेशान करना तुम्हें याद है ? और येह फ़रमाते हुए ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तबस्सुम आ गया और उन्हों ने आप के गौहरे दन्दान (मोती जैसे दांतों) का ह़ुस्न देख कर पहचाना कि येह तो जमाले यूसुफ़ी की शान है। **205 :** हमें जुदाई के बा'द सलामती के साथ मिलाया और दुन्या व दीन की ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाया। **206 :** बिरादराने ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ब त़रीक़े उ़ज़्र ख़्वाही (मुआ़फ़ी चाहते हुए) **207 :** इसी का नतीजा है कि अल्लाह ने आप को इ़ज़्ज़त दी, बादशाह बनाया और हमें मिस्कीन बना कर आप के सामने लाया। **208 :** अगर्चे मलामत करने का दिन है मगर मेरी जानिब से **209 :** इस के बा'द ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से अपने वालिदे माजिद का ह़ाल दरयाफ़्त किया, उन्हों ने कहा : आप की जुदाई के ग़म में रोते रोते उन की बीनाई बह़ाल नहीं रही आप ने फ़रमाया **210 :** जो मेरे वालिदे माजिद ने ता'वीज़ बना कर मेरे गले में डाल दिया था।

www.dawateislami.net

عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۳﴾ ع وَلَمَّا فَصَلَتِ

मुंह पर डालो उन की आंखें खुल जाएंगी और अपने सब घरभर (घर वालों) को मेरे पास ले आओ जब क़ाफ़िला मिस्र से

الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۴﴾

जुदा हुवा[211] यहां उन के बाप ने[212] कहा बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुश्बू पाता हूं अगर मुझे येह न कहो कि सठ (बहक) गया

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿۹۵﴾ فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ

बेटे बोले ख़ुदा की क़सम आप अपनी उसी पुरानी ख़ुद रफ़्तगी (महब्बत) में हैं[213] फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया[214]

اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ

उस ने वोह कुरता या'क़ूब के मुंह पर डाला उसी वक़्त उस की आंखें फिर आईं (रोशन हो गईं) कहा मैं न कहता था कि मुझे अल्लाह की वोह

مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا

शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते[215] बोले ऐ हमारे बाप हमारे गुनाहों की मुआफ़ी मांगिये बेशक हम

خٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۷﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۹۸﴾

ख़ताावार हैं कहा जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से चाहूंगा बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है[216]

211 : और कन्आन की तरफ़ रवाना हुवा। **212 :** अपने पोतों और पास वालों से **213 :** क्यूं कि वोह इस गुमान में थे कि अब हज़रते यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) कहां, उन की वफ़ात भी हो चुकी होगी। **214 :** लश्कर के आगे आगे वोह हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई यहूदा थे, उन्हों ने कहा कि हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास ख़ून आलूदा क़मीस भी मैं ही ले कर गया था, मैं ने ही कहा था कि यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) को भेड़िया खा गया, मैं ने ही उन्हें ग़मगीन किया था, आज कुरता भी मैं ही ले कर जाऊंगा और हज़रते यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) की ज़िन्दगानी की फ़रहत अंगेज़ (ख़ुशी पहुंचाने वाली) ख़बर भी मैं ही सुनाऊंगा तो यहूदा बरहना सर, बरहना पा, कुरता ले कर अस्सी फ़रसंग (दो सो चालीस मील) दौड़ते आए, रास्ते में खाने के लिये सात रोटियां साथ लाए थे, फ़र्ते शौक़ का येह आलम था कि उन को भी रास्ते में खा कर तमाम न कर सके। **215 :** हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने दरयाफ़्त फ़रमाया : यूसुफ़ कैसे हैं ? यहूदा ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर वोह मिस्र के बादशाह हैं। फ़रमाया : मैं बादशाही को क्या करूं येह बताओ किस दीन पर हैं ? अ़र्ज़ किया : दीने इस्लाम पर। फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अल्लाह की ने'मत पूरी हुई। बिरादराने हज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام **216 :** हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने वक़्ते सहर बा'दे नमाज़ हाथ उठा कर अल्लाह तआ़ला के दरबार में अपने साहिब ज़ादों के लिये दुआ़ की, वोह क़बूल हुई और हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को वह्य फ़रमाई गई कि साहिब ज़ादों की ख़ता बख़्श दी गई। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने वालिदे माजिद को मअ़ उन के अहलो औलाद के बुलाने के लिये अपने भाइयों के साथ दो सो सुवारियां और कसीर सामान भेजा था, हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने मिस्र का इरादा फ़रमाया और अपने अहल को जम्अ़ किया, कुल मर्द व ज़न बहत्तर या तिहत्तर तन थे, अल्लाह तआ़ला ने उन में येह बरकत फ़रमाई कि उन की नस्ल इतनी बढ़ी कि जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ बनी इसराईल मिस्र से निकले तो छ[6] लाख से ज़ियादा थे, बा वुजूदे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़माना इस से सिर्फ़ चार सो साल बा'द है। अल हासिल (क़िस्सा मुख़्तसर येह कि) जब हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र के क़रीब पहुंचे तो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने मिस्र के बादशाहे आ'ज़म को अपने वालिदे माजिद की तशरीफ़ आवरी की इत्तिलाअ़ दी और चार हज़ार लश्करी और बहुत से मिस्री सुवारों को हमराह ले कर आप अपने वालिद साहिब के इस्तिक़बाल के लिये सदहा रेशमी फरेरे उड़ाते (झन्डे लहराते), क़िताारें बांधे रवाना हुए, हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द यहूदा के हाथ पर टेक लगाए तशरीफ़ ला रहे थे, जब आप की नज़र लश्कर पर पड़ी और आप ने देखा कि सहरा ज़र्क़ बर्क़ (रंग बरंगे) सुवारों से पुर हो रहा है। फ़रमाया : ऐ यहूदा ! क्या येह फ़िरऔ़ने मिस्र है जिस का लश्कर इस शौकतो शिकोह से आ रहा है ? अ़र्ज़ किया : नहीं ! येह हुज़ूर के फ़रज़न्द यूसुफ़ हैं। "عَلَيْهِمُ السَّلَام" हज़रते जिब्रील ने आप को मुतअ़ज्जिब देख कर अ़र्ज़

www.dawateislami.net

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ

फिर जब वोह सब यूसुफ़ के पास पहुंचे उस ने अपने मां[217] बाप को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में[218] दाख़िल हो

شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿۹۹﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ

अल्लाह चाहे तो अमान के साथ[219] और अपने मां बाप को तख़्त पर बिठाया और वोह सब[220] उस के लिये सज्दे में गिरे[221] और

قَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَ

यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप येह मेरे पहले ख़्वाब की ता'बीर है[222] बेशक इसे मेरे रब ने सच्चा किया और

قَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ

बेशक उस ने मुझ पर एहसान किया कि मुझे क़ैद से निकाला[223] और आप सब को गाउं से ले आया बा'द इस के

اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ

कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में नाचाक़ी करा दी थी बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान कर दे

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۰۰﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ

बेशक वोही इल्म व हिक्मत वाला है[224] ऐ मेरे रब बेशक तू ने मुझे एक सल्तनत दी और मुझे कुछ

مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي

बातों का अन्जाम निकालना सिखाया ऐ आस्मानों और ज़मीन के बनाने वाले तू मेरा काम बनाने वाला है

किया : हवा की तरफ़ नज़र फ़रमाइये आप के सुरूर में शिर्कत के लिये मलाएका हाज़िर हुए हैं जो मुद्दतों आप के ग़म के सबब रोते रहे हैं। मलाएका की तस्बीह ने और घोड़ों के हिनहिनाने ने और तब्लो बूक़ की आवाज़ों ने अजीब कैफ़िय्यत पैदा कर दी थी, येह मुहर्रम की दसवीं तारीख़ थी जब दोनों हज़रात वालिदो वल्द, पिदरो पिसर (बाप और बेटा) क़रीब हुए। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सलाम अर्ज़ करने का इरादा ज़ाहिर किया, हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ किया कि आप तवक्कुफ़ कीजिये और वालिद साहिब को इब्तिदा ब सलाम का मौक़अ दीजिये। चुनान्चे हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَامُذْهِبَ الْاَحْزَان (या'नी ऐ ग़मो अन्दोह के दूर करने वाले सलाम हो) और दोनों साहिबों ने उतर कर मुआनक़ा किया और मिल कर ख़ूब रोए, फिर उस मुज़य्यन फ़िरूद गाह (क़ियाम गाह) में दाख़िल हुए जो पहले से आप के इस्तिक़्बाल के लिये नफ़ीस ख़ैमे वग़ैरा नस्ब कर के आरास्ता की गई थी। येह दुख़ूल हुदूदे मिस्र में था इस के बा'द दूसरा दुख़ूल ख़ास शहर में है जिस का बयान अगली आयत में है। 217 : मां से या ख़ास वालिदा मुराद हैं अगर उस वक़्त तक ज़िन्दा हों या ख़ाला। मुफ़स्सिरीन के इस बाब में कई अक़्वाल हैं। 218 : या'नी ख़ास शहर में 219 : जब मिस्र में दाख़िल हुए और हज़रते यूसुफ़ अपने तख़्त पर जल्वा अफ़्रोज़ हुए आप ने अपने वालिदैन का इक्राम फ़रमाया। 220 : या'नी वालिदैन और सब भाई 221 : येह सज्दा तहिय्यत व तवाज़ोअ (सलाम व आजिज़ी) का था जो उन की शरीअत में जाइज़ था जैसे कि हमारी शरीअत में किसी मुअज़्ज़म (बुज़ुर्ग) की ता'ज़ीम के लिये क़ियाम और मुसाफ़हा और दस्त बोसी जाइज़ है। सज्दए इबादत अल्लाह तआला के सिवा और किसी के लिये कभी जाइज़ नहीं हुवा न हो सकता है क्यूं कि येह शिर्क है और सज्दए तहिय्यत व ता'ज़ीम भी हमारी शरीअत में जाइज़ नहीं। 222 : जो मैं ने सिग़र सिनी या'नी बचपन की हालत में देखा था। 223 : इस मौक़अ पर आप ने कूंएं का ज़िक्र न किया ताकि भाइयों को शरमिन्दगी न हो। 224 : अस्हाबे तवारीख़ का बयान है कि हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास मिस्र में चौबीस 24 साल बेहतरीन ऐशो आराम में ख़ुशहाली के साथ रहे, क़रीबे वफ़ात आप ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को वसिय्यत की, कि आप का जनाज़ा मुल्के शाम में ले जा कर अर्ज़े मुक़द्दसा में आप के वालिद हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र शरीफ़ के पास दफ़्न किया जाए, इस वसिय्यत की ता'मील की गई और बा'दे

www.dawateislami.net

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ

दुन्या और आख़िरत में मुझे मुसल्मान उठा और उन से मिला जो तेरे कुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं[225] येह कुछ

اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ

ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी त़रफ़ वह्य करते हैं और तुम उन के पास न थे[226] जब उन्हों ने अपना काम पक्का किया था

وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا

और वोह दाउं चल रहे थे[227] और अक्सर आदमी तुम कितना ही चाहो ईमान न लाएंगे और तुम

تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ ع وَكَاَيِّنْ مِّنْ ع ١٥

इस पर उन से कुछ उजरत नहीं मांगते येह[228] तो नहीं मगर सारे जहान को नसीह़त और कितनी निशानियां

اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَ

हैं[229] आस्मानों और ज़मीन में कि लोग उन पर गुज़रते हैं[230] और उन से बे ख़बर रहते हैं और

مَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ

उन में अक्सर वोह हैं कि अल्लाह पर यक़ीन नहीं लाते मगर शिर्क करते हुए[231] क्या इस से निडर हो बैठे कि

غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾

अल्लाह का अ़ज़ाब उन्हें आ कर घेर ले या क़ियामत उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो

वफ़ात साल (एक ख़ास क़िस्म के दरख़्त) की लकड़ी के ताबूत में आप का जसदे अत्हर शाम में लाया गया, उसी वक़्त आप के भाई ईस की वफ़ात हुई और आप दोनों भाइयों की विलादत भी साथ हुई थी और दफ़्न भी एक ही क़ब्र में किये गए और दोनों साह़िबों की उ़म्र एक सो पेंतालीस साल की थी, जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने वालिद और चचा को दफ़्न कर के मिस्र की त़रफ़ वापस हुए तो आप ने येह दुआ़ की जो अगली आयत में मज़्कूर है। **225 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते इस्ह़ाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمُ السَّلَام। अम्बिया सब मा'सूम हैं, ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की येह दुआ़ ता'लीमे उम्मत के लिये है कि वोह हुस्ने ख़ातिमा की दुआ़ मांगते रहें। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने वालिदे माजिद के बा'द तेईस साल रहे इस के बा'द आप की वफ़ात हुई, आप के मक़ामे दफ़्न में अहले मिस्र के अन्दर सख़्त इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हुवा, हर मह़ल्ले वाले हुसूले बरकत के लिये अपने ही मह़ल्ले में दफ़्न करने पर मुसिर (इसरार कर रहे) थे, आख़िर येह राय क़रार पाई कि आप को दरियाए नील में दफ़्न किया जाए ताकि पानी आप की क़ब्र से छूता हुवा गुज़रे और उस की बरकत से तमाम अहले मिस्र फ़ैज़याब हों। चुनान्चे आप को संगे रुख़ाम, या संगे मरमर के सन्दूक़ में दरियाए नील के अन्दर दफ़्न किया गया और आप वहीं रहे यहां तक कि चार सो बरस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप का ताबूत शरीफ़ निकाला और आप को आप के आबाए किराम के पास मुल्के शाम में दफ़्न किया। **226 :** या'नी बिरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के **227 :** बा वुजूद इस के ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आप का इन तमाम वाक़िआ़त को इस तफ़्सील से बयान फ़रमाना ग़ैबी ख़बर और मो'जिज़ा है। **228 :** क़ुरआन शरीफ़ **229 :** ख़ालिक़ और उस की तौह़ीद व सिफ़ात पर दलालत करने वाली, इन निशानियों से हलाक शुदा उम्मतों के आसार मुराद हैं। (مدارک) **230 :** और उन का मुशाहदा करते हैं लेकिन तफ़क्कुर (सोच बिचार) नहीं करते, इ़ब्रत नहीं ह़ासिल करते **231 :** जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक येह आयत मुश्रिकीन के रद में नाज़िल हुई जो अल्लाह तआ़ला की ख़ालिक़िय्यत व रज़्ज़ाक़िय्यत का इक़्रार करने के साथ बुत परस्ती कर के ग़ैरों को इ़बादत में उस का शरीक करते थे।

www.dawateislami.net

وقف النبي عليه الصلوة والسلام

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؔ قف عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ؕ

तुम फ़रमाओ[232] येह मेरी राह है मैं **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाता हूं मैं और जो मेरे क़दमों पर चलें दिल की आंखें रखते हैं[233]

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ

और **अल्लाह** को पाकी है[234] और मैं शरीक करने वाला नहीं और हम ने तुम से पहले जितने रसूल भेजे

اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ؕ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

सब मर्द ही थे[235] जिन्हें हम वह़्य करते और सब शहर के साकिन थे[236] तो क्या येह लोग ज़मीन में चले नहीं

فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ

तो देखते इन से पहलों का क्या अन्जाम हुवा[237] और बेशक आख़िरत का घर

لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا

परहेज़ गारों के लिये बेहतर तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं यहां तक कि जब रसूलों को ज़ाहिरी अस्बाब की उम्मीद न रही[238] और लोग समझे

اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا

कि रसूलों ने उन से ग़लत़ कहा था[239] उस वक़्त हमारी मदद आई तो जिसे हम ने चाहा बचा लिया गया[240] और हमारा अ़ज़ाब

عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي

मुजरिम लोगों से फेरा नहीं जाता बेशक उन की ख़बरों से[241] अ़क़्ल मन्दों की आंखें

الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ

खुलती हैं[242] येह कोई बनावट की बात नहीं[243] लेकिन अपने से अगले कामों की[244]

232 : ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन मुश्रिकीन से कि तौह़ीदे इलाही और दीने इस्लाम की दा'वत देना **233 :** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन के अस्ह़ाब अह़सन त़रीक़ और अफ़्ज़ल हिदायत पर हैं, येह इ़ल्म के मा'दिन (सरचश्मे), ईमान के ख़ज़ाने, रह़मान के लश्कर हैं। इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : त़रीक़ा इख़्तियार करने वालों को चाहिये कि गुज़रे हुओं का त़रीक़ा इख़्तियार करें वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अस्ह़ाब हैं जिन के दिल उम्मत में सब से ज़ियादा पाक, इ़ल्म में सब से अ़मीक़ (कामिल), तकल्लुफ़ (नुमूदो नुमाइश) में सब से कम, ऐसे ह़ज़रात हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सोह़बत और उन के दीन की इशाअ़त के लिये बरगुज़ीदा किया। **234 :** तमाम उ़यूबो नक़ाइस और शुरका व अज़्दाद व अन्दाद (मुख़ालिफ़ व हमपल्ला) से। **235 :** न फ़िरिश्ते न किसी औ़रत को नबी बनाया गया। येह अहले मक्का का जवाब है जिन्हों ने कहा था कि **अल्लाह** ने फ़िरिश्तों को क्यूं न नबी बना कर भेजा ? उन्हें बताया गया कि येह क्या तअ़ज्जुब की बात है पहले ही से कभी फ़िरिश्ते नबी हो कर न आए। **236 :** ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि अहले बादिया (दीहातियों) और जिन्नात और औ़रतों में से कभी कोई नबी नहीं किया गया। **237 :** अम्बिया के झुटलाने से किस त़रह़ हलाक किये गए **238 :** या'नी लोगों को चाहिये कि अ़ज़ाबे इलाही में ताख़ीर होने और ऐ़शो आसाइश के देर तक रहने पर मग़रूर न हो जाएं क्यूं कि पहली उम्मतों को भी बहुत मोहलतें दी जा चुकी हैं यहां तक कि जब उन के अ़ज़ाबों में बहुत ताख़ीर हुई और ब अस्बाबे ज़ाहिर रसूलों को क़ौम पर दुन्या में ज़ाहिर अ़ज़ाब आने की उम्मीद न रही। (ابوالسعود) **239 :** या'नी क़ौमों ने गुमान किया कि रसूलों ने उन्हें जो अ़ज़ाब के वा'दे दिये थे वोह पूरे होने वाले नहीं। (مدارک وغیرہ) **240 :** अपने बन्दों में से या'नी इत़ाअ़त करने

www.dawateislami.net

يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾ ع

तस्दीक़ है और हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान और मुसल्मानों के लिये हिदायत व रहमत

آياتها ٤٣ ۞ ١٣ سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ ٩٦ ۞ ركوعاتها ٦

सूरए रा'द मदनिय्या है, इस में तेंतालीस आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَ

येह किताब की आयतें हैं[2] और वोह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[3] ह़क़ है[4]

لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ

मगर अक्सर आदमी ईमान नहीं लाते[5] **अल्लाह** है जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया बे सुतूनों के कि

تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ

तुम देखो[6] फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र किया[7] हर एक एक ठहराए हुए

لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ

वा'दे तक चलता है[8] **अल्लाह** काम की तदबीर फ़रमाता और मुफ़स्सल निशानियां बताता है[9] कहीं तुम अपने रब का मिलना

वाले ईमानदारों को बचा लिया। **241 :** या'नी अम्बिया की और उन की क़ौमों की **242 :** जैसे कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए से बड़े बड़े नताइज निकलते हैं और मा'लूम होता है कि सब्र का नतीजा सलामत व करामत है और ईज़ा रसानी व बद ख़्वाही का अन्जाम नदामत और **अल्लाह** पर भरोसा रखने वाला काम्याब होता है और बन्दे को सख़्तियों के पेश आने से मायूस न होना चाहिये, रह़मते इलाही दस्त गीरी करे तो किसी की बद ख़्वाही कुछ नहीं कर सकती। इस के बा'द क़ुरआने पाक की निस्बत इर्शाद होता है : **243 :** जिस को किसी इन्सान ने अपनी त़रफ़ से बना लिया हो क्यूं कि इस का ए'जाज़ (आ़जिज़ कर देना) इस के मिनल्लाह (**अल्लाह** की त़रफ़ से) होने को क़त़्ई त़ौर पर साबित करता है। **244 :** तौरैत इन्जील वग़ैरा कुतुबे इलाहिय्यह की **1 :** सूरए रा'द मक्किय्या है और **एक** रिवायत ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से येह है कि दो आयतों "لَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ" और "يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا" के सिवा बाक़ी सब मक्की हैं, और **दूसरा** क़ौल येह है कि येह सूरह मदनी है, इस में छ[6] रुकूअ़ तेंतालीस या पेंतालीस आयतें और आठ सो पचपन कलिमे और तीन हज़ार पांच सो छ[6] ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ की **3 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **4 :** कि इस में कुछ शुबा नहीं **5 :** या'नी मुशरिकीने मक्का जो येह कहते हैं कि येह कलाम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का है इन्हों ने ख़ुद बनाया, इस आयत में उन का रद फ़रमाया और इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी रबूबिय्यत के दलाइल और अपने अ़जाइबे क़ुदरत बयान फ़रमाए जो उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करते हैं **6 :** इस के दो मा'ना हो सकते हैं, **एक** येह कि आस्मानों को बिग़ैर सुतूनों के बुलन्द किया जैसा कि तुम इन को देखते हो या'नी ह़क़ीक़त में कोई सुतून ही नहीं है और येह **मा'ना** भी हो सकते हैं कि तुम्हारे देखने में आने वाले सुतूनों के बिग़ैर बुलन्द किया, इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि सुतून तो हैं मगर तुम्हारे देखने में नहीं आते और क़ौले अव्वल सह़ीह़ तर है इसी पर जुम्हूर हैं। (خازن و جمل) **7 :** अपने बन्दों के मनाफ़ेअ़ और अपने बिलाद के मसालेह़ के लिये, वोह ह़स्बे हुक्म गर्दिश में हैं। **8 :** या'नी फ़नाए दुन्या के वक़्त तक। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि اَجَلٍ مُّسَمًّى से इन के दरजात व मनाज़िल मुराद हैं या'नी वोह अपनी मनाज़िल व दरजात में एक ग़ायत (ह़द) तक गर्दिश करते हैं जिस से तजावुज़ नहीं कर सकते, शम्सो क़मर में से हर एक के लिये सैरे ख़ास जिहते ख़ास की त़रफ़ सुरअ़त व बत़ू व ह़रकत की मिक़्दारे ख़ास से मुक़र्रर फ़रमाई है। **9 :** अपनी वह़दानिय्यत व कमाले क़ुदरत की।

www.dawateislami.net